The word impossible
Their hearts lie in An

ओंकार आदर्श-चरितमाला की सातवीं पुस्तक।
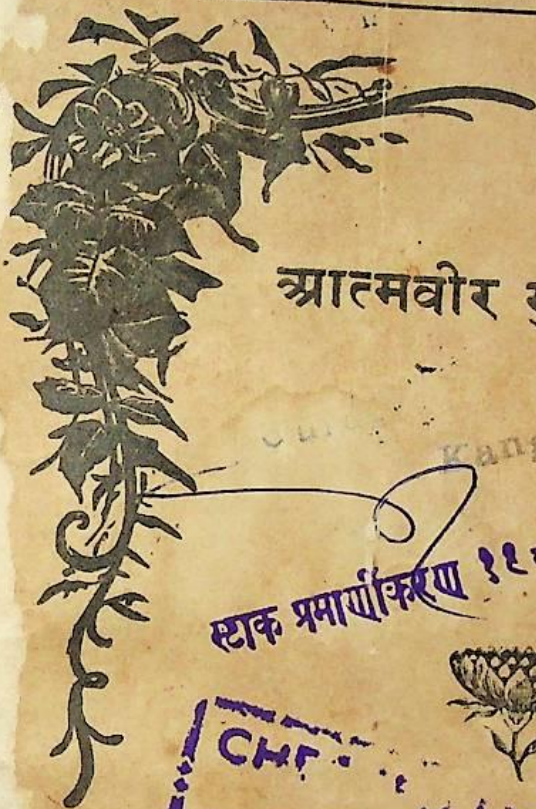
आत्मवीर सुक़रात

सम्पादक

ओङ्कारनाथ वाजपेयी

यूनान के प्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता
आत्मवीर सुक़रात

Onkar Press Allahabad.

॥ ओ३म् ॥

ओंकार आदर्श-चरितमाला की छठी पुस्तक

आत्मवीर सुकरात

राजनैतिक और सामाजिक सुधारक

'Self-reverence, self knowledge, self control,
These three alone lead life to sovereign power,
Yet not for power (power for herself
Would come uncalled for) but to live by law,
Acting the law we live by without fear ;
And because right is right, to follow right,
Were wisdom in the scorn of Consequence'.

—Tennyson

लेखक

पं० बृजमोहन शर्म्मा लहरा निवासी

प्रकाशक

पं० ओंकारनाथ वाजपेयी

प्रथमवार १०००] [मूल्य ।)

समर्पण

इस पुस्तक को

मैं

श्रीयुत पं० ओंकारनाथ जी वाजपेयी

के

कर कमलों में

उनके मेरे ऊपर कृपा करनेके हेतु

सादर समर्पित करता हूं ।

व्रज मोहन शर्म्मा

लहरा निवासी

भूमिका

प्रिय पाठक वृन्द

इस पुस्तक की कोई विस्तृत भूमिका लिखने की आवश्यकता नहीं है। जो कुछ इस पुस्तक में लिखा गया है वह Trial and Death of Socrates by F. J. Church M.A, के आधार पर है। सुकरात यूनान देश का बड़ा भारी राजनैतिक व सामाजिक सुधारक हो गया है अतः उसके जीवन चरित को पढ़कर यदि एक भी सज्जन लाभ प्राप्त कर सकें तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा। यदि आपने इस पुस्तक को अपने एक बन्धु के उत्साह का फल समझ कर, अपनाया तो मैं पुनः आपकी सेवा करने का उद्योग करूंगा।

अन्त में मैं पं० ज्योती प्रसाद शर्म्मा दभा निवासी व म० विजयसिंह जी तथा म० रामकिशोर जी गुप्त को हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे इस काम में अच्छी सम्मति प्रदान की। पं० ज्योती प्रसाद शर्म्मा ने तो इस पुस्तक को मेरे साथ दुहराया भी था अतः मैं उनका विशेषकर कृतज्ञ हूं।

ता० १ अक्तूबर १९१५
आश्विन कृष्ण अष्टमी
संवत् १९७२

विनीत
बृजमोहन शर्म्मा
लहरा निवासी।

॥ ओ३म् ॥

आत्मवीर सुकरात

की

जीवनी पर एक दृष्टि

[१]

पूर्व निवेदन

आहार निद्रा भय मैथुनञ्च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

इस छोटीसी पुस्तक में सुकरात की जीवनी, विचार, उस पर लगाये अभियोग, कारागार समय और मृत्यु का वृत्तांत है। इसमें उसकी प्रबल सत्य की खोज का भी वर्णन किया गया है जिस खोज को कोई ब्राह्य शक्ति उसके जीवन से जुदा नहीं कर सकी थी किन्तु उसका अन्त सुकरात के जीवनान्त के ही साथ हुआ था। इसमें यह भी दिखाया गया है कि वह उन लोगों के साथ जो कि मूर्ख होते हुए भी अपने को बुद्धिमान समझते थे, कैसी विलक्षण तर्क करता था। इन बातों को

सामने रखकर देखें तो ज्ञात होता है कि उसने इतिहास के पृष्ठों में कितना उच्च पद प्राप्त करलिया था। जब उसके जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो उसकी समानता करनेवाले कठिनता से बहुत कम दिखाई देते हैं। सुकरात की जीवनी के आरम्भिक समय का एक बड़ा भाग अज्ञात् है। जो कुछ भी उसके विषय में मालूम हुआ है वह केवल तितर बितर पड़े हुए लेखों द्वारा ही जाना गया है। उसके विषय में बहुत से लेखकों के लेख मिलते हैं किन्तु उनमें से विश्वसनीय कोई नहीं है। अफ़लातू (Plato) और ज़ेनोफ़न (Zenophon) ही की सम्मति उसके सम्बन्ध में सत्य कही जा सकती है। परन्तु इन दोनों ने भी उसकी वृद्धावस्था का ही वृत्तान्त लिखा है, इस प्रकार उसके जीवन का प्रथमभाग अन्धकारमय है। अतः जो कुछ भी उसका हाल मिला है वह पाठकों के सन्मुख टूटे फूटे शब्दों में रखा जाता है। परन्तु उसकी जीवन चर्चा लिखने से पहिले एथेन्स नगर की सुक़रात के समय की दशा का जान लेना आवश्यक है।

---

[२]

एथेन्स नगर की दशा व राज्यप्रणाली

यूरुप महाद्वीप के दक्षिणी भाग में एक यूनान देश है जिसे ग्रीस (Greece) भी कहते हैं। यह देश प्राचीनकाल में सभ्यता के शिखर पर पहुंचगया था। यहां की राजधानी उसी समय से एथेन्स (Athens) नगर में रहती आई है। सुकरात के समय में एथेन्स बड़ा नगर नहीं था और वहां के

निवासी अपना अधिक समय सर्वसाधारण के साथ व्यतीत करते थे। उस समय वहां पर प्रत्येक विद्या सम्बन्धी पंडित वास करते थे अतः वहां का रहना हीं मनुष्य के लिये बड़ी भारी शिक्षा देनेवाला होगया! राजनेता पेरीकिल्स (Pericles) का विचार था कि एथेन्स वास्तविक में शिक्षा का केन्द्र हो जावे। सुकरात ने भी एक स्थान पर यूनान देश की आत्मिक व मानसिक उन्नति के विषय में बड़े गौरव के साथ लिखा है। "एथेन्स के निवासी वहां की राज्य सम्बन्धी संस्थाओं द्वारा भी एक प्रकार की शिक्षा पाते थे। डेलस द्वीप (Delos island) की सन्धि (डेलस और अन्य कई द्वीपों ने मिल-कर ईरान के बादशाह के विपरीत एक षड्यन्त्र रचा था उसी के सम्बन्ध में यह सन्धि हुई थी) का केन्द्र होने के कारण एथेन्स ने इतना उच्च नाम प्राप्त करलिया था कि इसके शत्रु अति द्वेष करने लगे थे। एथेन्स एक ऐसे राज्य का केन्द्र था जिसमें सदैव न्यायानुसार कार्य होते थे। उस राज्य की प्रधान संस्था में प्रत्येक एथेन्स निवासी को (यदि वह किसी प्रकार अयोग्य न था) भाग लेना पड़ता था। इस संस्था के अधिवेशन के समय प्रत्येक सभासद की उपस्थिति अनिवार्य (Compulsory) थी। वहां पर कोई पंचायती संस्था वा ऐसी संस्थाएं जैसी कि आज कल इङ्गलिस्तान जापान, जर-मनी, अमरीका इत्यादि सभ्य देशों में है नहीं थीं। एथेन्स की इस संस्था के प्रधान ही सब कार्य करते थे। जब यह सारी बातें उपस्थित थीं तो अवश्य ही प्रत्येक निवासी प्रतिदिन राजकीय झगड़ों को सुनने और उनके विषय में अपनी सम्मति प्रगट करने का अवसर प्राप्त करता था, इस प्रकार उसको राज्यसंबन्धी उच्च श्रेणी की शिक्षा मिलती थी। वह गृहस्थ,

लड़ाई, सन्धि विदेशों तथा स्वदेश सम्बन्धी बातों के विषय में समर्थक व विरोधक के तर्क वितर्क को सुनता था। वह देखता था कि किस प्रकार एक ओर के मनुष्य प्रस्ताव उपस्थित करते और दूसरे उसे दूर प्रदर्शिता के साथ काटते थे, प्रत्येक निवासी को स्वयं भी प्रत्येक बात की परीक्षा करनी पड़ती थी और पश्चात् उस पर अपनी सम्मति प्रगट करनी होती थी। वहां पर बहुत से झगड़े पंचायतों द्वारा भी निपटारे जाते थे और इन सभाओं में सबको बारी २ से भाग लेना पड़ता था। पाठको ! क्या इस बात से यह अनुमान नहीं किया जा सकता कि एथेन्स निवासी राज्य संबन्धी शिक्षा सरलता से प्राप्त कर लेते थे। इससे यह भी प्रगट होता है कि सुकरात को लोगों के प्रति तर्क वितर्क करके सत्य बात को जान लेने की कितनी आवश्यकता हुई होगी। एथेन्स की राज्यप्रणाली का विशेषवर्णन आगे भी प्रसङ्गानुसार किया गया है।

---

[३]

सुकरात का वंश परिचय और बाल्यकाल

सुकरात का जन्म ईसा मसीह से लगभग ४६९ वर्ष पहिले एक शिल्पकार के घर में हुआ। उस दिन किसको ज्ञात था कि यही तुच्छ बालक अपने जीवन में उन्नति करके सर्वश्रेष्ठ तत्ववेत्ता (Philosopher) हो जावेगा। क्योंकि बहुत से बालक उत्पन्न होते, खाते पीते और मरते हैं परन्तु धर्म व

आत्मसुधार की ओर बहुत कम की दृष्टि जाती है। किसी कवि ने सत्य ही कहा है :—

बरसने को तो बादल रोज़ मौसमें बरसते हैं।
करे क्या लेकर के लाख कीमत में वह सस्ते हैं।
भरन गरमी की पड़ती है मगर काम की एक बूंद होती है।
उसे कहता पानी कौन वह अनमोल मोती है।

सुकरात का पिता सोफरोनिस्कस (Sophroniscus) एक छोटा सा शिल्पकार था और उसकी माता दाई का कार्य करती थी। इस बात का ठीक २ पता नहीं लगता कि सुकरात ने आत्मिक और मानसिक शिक्षा कहां से प्राप्त की थी। इसके विषय में हम जो कुछ कह सकते हैं वह यह है कि उसकी आयुका आरम्भिक भाग ऐसे समय में व्यतीत हुआ था जब कि यूनान देश उन्नति और सभ्यता के शिखर पर विराजमान था। वह समय यूनान की कला कौशल, साहित्य, तर्क, शास्त्र और राजनीति की विलक्षण और शीघ्र होने-वाली उन्नति का था। एथेन्स में उस समय बड़े २ राजनेता और विद्वान देखे जाते थे। वहाँ पर बड़े २ शिल्पकार, कवि, इतिहासवेत्ता जोकि आज दिन तक आदर्श बनाये जाते हैं, निवास करते थे। उनमें से कुछ यह भी थे, एशीलस (कवि) फ्राईडास (शिल्पकार) पेरीकिल्स (राजनेता) थ्यूसी डाइड्स (इतिहासवेत्ता) इकीनस इत्यादि। यह ठीक बात है कि सुकरात ने बड़े होंने पर इन सब श्रेष्ठ पुरुषों से सम्भाषण किया हो क्योंकि एथेन्स बड़ा नगर नहीं था और इसके अतिरिक्त वहां की राज्यप्रणाली भी बड़ी सहायक थी।

(४)

शिक्षा और गृहस्थ जीवन

सुक़रात के विद्याभ्यास (पाठशाला इत्यादि में पढ़ने) का कुछ भी पता नहीं है किन्तु जो कुछ भी कहा जाता है वह केवल मन गढ़न्त है। बाल्यावस्था में उसके समय का अधिक भाग विशेषकर गान विद्या और शारीरिक व्यायाम में व्यतीत होता था। वह यूनानी साहित्य से अच्छी २ बातें उद्धृत करने का बड़ा अनुरागी था और होमर (Homer) एक प्रसिद्ध (यूनानी कवि व लेखक) से अधिक परिचित था। ज़ेनोफ़न लिखता है कि वह (सुकरात) बड़े २ स्वर्गवासी बुद्धिमानों के लेखों और विचारों को अपने मित्रों के साथ पढ़ा करता था उनमें ऐसी कहावतें भी थीं जैसे 'तू अपने को पहिचान' जिस पर कि उसकी सम्पूर्ण शिक्षा की आधार शिला रक्खी गई है। सुकरात उस समय के प्रचिलित गणित शास्त्र की भी योग्यता रखता था। वह किसी अंश में ज्योतिष और उच्च रेखागणित भी समझता था और थोड़ा बहुत शारीरिक, तथा सृष्टि सम्बन्धी शास्त्रों के अविष्कारों से भी परिचित था। परन्तु उसकी इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के विषय में कोई विश्वसनीय साक्षी नहीं है। हम नहीं कह सकते कि वह शारीरिक तथा सृष्टि सम्बन्धी Cosmical शिक्षा से सच मुच ही कुछ जानकारी रखता था और उसने यह शिक्षा किससे कब और कहां पर पाई थी।

ऐसा अनुमान किया जाता है कि उसने गणित और वैज्ञानिक शिक्षा अपने बाल्यकाल में प्राप्त की थी फ़ीडो के साथ

सम्भाषण करते समय वह एक स्थान पर कहता है कि युवावस्था में उसे प्राकृतिक शिक्षा (study of nature) प्राप्त करने की बड़ी उत्कण्ठा थी। उसी स्थान पर यह भी कहा गया है कि उसने प्राकृतिक शिक्षा के पश्चात् (doctrine of ideas) विचार सिद्धान्त (प्लेटो की यह विचार सम्बन्धी कल्पना थी कि यह संसार एक दूसरे संसार का जिसे हम तर्क द्वारा सिद्ध कर सकते हैं अनुकरण है) की ओर अपना ध्यान फेरा था। अरिस्तोफ़ानस अपनी पुस्तक clouds में लिखता है कि सुकरात एक विज्ञानी था जो कि अपने शिष्यों को अन्य बातों के अतिरिक्त गणित और ज्योतिष भी पढ़ाता था, परन्तु इससे कोई बात ठीक २ सिद्ध नहीं होती। उसकी यह बात समूल अयुक्त है क्योंकि यह बात पूर्णतया सत्य ठहराई जा चुकी है कि सुकरात का विज्ञान से कुछ भी सम्बन्ध नहीं था। वह विज्ञान को उसी सीमा तक ठीक कहता था जहां तक वह मनुष्य के लिये लाभकारी होवै जिस प्रकार कि ज्योतिष ज़हाज के नेता को लाभ देती है। सुकरात कहता था कि विज्ञान से सम्बन्ध करने वाले लोग सूफ़ी लोगों के समान हैं जो कि सर्वदा असम्भव बातों को सम्भव सिद्ध करने की व्यर्थ चेष्टा करते हैं और जो कि देवताओं की इच्छा के प्रतिकूल बहुत सी बातें प्रगट करते हैं। वह यहभी कहा करता था कि जो समय ऐसी बातों में व्यर्थ नष्ट किया जाता है वह कई प्रकार से लाभकारी बातों में लगाया जावे तो अच्छी बात है।

यह ठीक २ नहीं मालूम कि हमारे चरित नायक का ज़ेन्थिपी (Zanthippe) के साथ विवाह सम्बन्ध किस समय हुआ था। ज़ेन्थिपी से सुकरात के तीन पुत्र पैदा हुये

थे। इनके नाम लेम्प्रोकिल्स, सोफ्रोनिस्कस और मैनेज़ीनस थे। आजकल के लेखक कहते हैं कि ज़ेन्थिपी बड़ी लड़ाकू स्त्री थी, वह सर्वदा सुकरात और अपने पुत्रों के साथ रार मचाये रहती थी। लेम्प्रोकिल्स अपनी माता की कटुवानी और स्वभाव को असह्य समझता था। परन्तु सुकरात ने उस को समझा कर उसके हृदय में यह बात भलींभांति बिठादी थी कि माता पिता की टेढ़ी आंखें केवल सन्तान के हित के लिये होती हैं। जिस दिन चरित नायक को विष पिलाया गया था उस दिन ज़ेन्थिपी उसके पास उपस्थित न थी, इस से प्रगट होता है कि सुकरात को गृहस्थी का अधिक ध्यान न था। लेखकों की बहुसम्मति से ज्ञात होता है कि सुकरात का गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं था।

[५]

आत्मिक बल और न्याय प्रियता

सुकरात की जीवनी के प्रथम चालीस वर्ष उपरोक्त बातों से भरे हुए हैं। इन चालीस वर्षों का उसके विषय में अधिक कुछ नहीं मालूम है। ईसा के ४३२ वर्ष पहिले से लेकर ४२९ वर्ष तक वह पोटिडिआ (Potidœa) की लड़ाई में रहा और वहां पर भूक प्यास, सर्दी इत्यादि अनेक कष्टों को सहर्ष सहन करता रहा। इसी लड़ाई में उसने एल्कीबाइड्स (Alcibiades) नामी योद्धा की जान बचाई थी और हर्ष पूर्वक उसको वीरता का पुरस्कार दिलाया था। ४३१ बी० सी में पैलोपोनिशिया की लड़ाई (Peloponnesion war) ठन गई और ४२४

बी० सी० में थीबन्स ने एथेन्स निवासियों को डेलियम (Delium) स्थान पर परास्त कर तितर वितर करदिया तब सुकरात और लेशस (Laches) ही ऐसे वीर थे जो निरुत्साह न हुए। अन्य सब तो भाग गये परन्तु सुकरात अपने स्थान पर डटा रहा और उसने सब को अपनी शूरता से चकित करदिया। यदि एथेन्स के सभी लोग सुकरात का अनुकरण करते तो परास्त होजाना तो दूर रहा रण को अवश्य जीतलेते। फिर सुकरात ने तीसरी वार अपनी वीरता एमफीपोलीज़ (Amphipolis) की लड़ाई में दिखाई परन्तु उसके कार्यों के विषय में अधिक नहीं मालूम है। इस लड़ाई में दोनों ओर के सेनापति मारे गये थे।

इस लड़ाई के १६ वर्ष पश्चात् तक सुकरात के विषय में कुछ नहीं मालूम है। उसके जीवन की विशेष घटनाएं न्यायालय में हुई जो कार्यवाही के बीच दर्शाई गई हैं जो कि हमारे चरित नायक ने स्वयं वर्णन की हैं। उनसे प्रगट होता है कि उसका आत्मिकबल अद्वितीय था और संसार में ऐसी कोई भी क्रोधी अथवा मारडालने वाली शक्ति नहीं थी जो उसे सत्य के मार्ग से हटा दे। महा पुरुषों की वीरता का यही सच्चा नमूना है।

४०६ बी० सी० में लेसी डेमोनियावालों और एथेन्स वालों के बीच अर्गीनुसी स्थान पर युद्ध हुआ जिसका परिणाम एथिन्स निवासियों की अविजय हुई। परन्तु इनका सेनाधिकारी न तो अपने मृत्यु प्राप्त साथियों को गाढ़ सके और जहाज़ों के टूट जाने पर हानि प्राप्त की रक्षा कर सके इस बात को सुन कर एथेन्स में गड़ बड़ी फैलगई और बहुत

से लोग हल्ला मचाने लगे। सेनाधिकारियों के ऊपर यह अभियोग चलाया गया परन्तु उन्होंने कहा कि हमने अपने कई सहकारियों को यह कार्य करने की आज्ञा दी थी वे बिचारे वेगवान वायु के आजाने से कुछ भी न कर सके। इसके पश्चात वहां की प्रवन्ध कारिणी संस्था ने निश्चय किया कि एथेन्स निवासी दोनों ओर की बातें सुन कर एक ही साथ आठों सेनाधिकारियों के विषय में आज्ञा देंगे परन्तु यह निश्चय करना न्याय विरुद्ध था क्योंकि एथेन्स की राज्य प्रणाली के अनुसार प्रत्येक दोषी के विषय में पृथक २ न्याय करना चाहिये था।

सुकरात भी उस समय वहां की प्रबन्ध कारिणी सभा का सदस्य था। इस सभा के कुल सदस्य पांच सौ थे जो कि १० जातियों में से प्रत्येक से पचास २ लिये जाते थे। प्रत्येक जाति के लोग पैंतीस २ दिन तक अपनी बारी से पंच बनते थे और इनमें से प्रत्येक दश २ एक २ सप्ताह के लिये सरपंच ठहराये जाते थे। इन दश में से एक व्यक्ति वक्ता बनाया जाता था अर्थात् उसी को लोगों की सम्मति लेने का अधिकार था यद्यपि पहिले भी कई वक्ताओं ने उपरोक्त प्रस्ताव का विरोध किया था परन्तु वह बिचारे मृत्यु और अयश के भय दिखाये जाने पर चुप रह गये। जिस दिन सुकरात वक्ता बनाया गया तो उसने उस प्रस्ताव को न्याय प्रतिकूल समझ कर उसके विषय में लोगों की सम्मति न ली। लोगों ने उसे बहुतेरा धमकाया परन्तु उसने साहस पूर्वक उत्तर दिया मैंने ठान लिया है कि चाहे जैसी आपत्ति आवे उसे मैं न्याय के हेतु सहन करूंगा और तुम्हारे न्याय विरुद्ध प्रस्ताव में भाग न लूंगा परन्तु सम्मति न लेने का अधिकार उसे एक ही दिन के लिये

प्राप्त था, पीछे विचारे डरपोक वक्ताओं ने सम्मति लेना स्वीकार कर लिया और अन्त में सेनाधिकारियों को न्याय विरुद्ध मृत्यु दण्ड मिला।

दो वर्ष पश्चात् चरित नायक ने पुनः अपने कार्य से दर्शा दिया कि वह न्याय के लिये सर्व प्रकार के कष्ट सहने को तयार है। ४०४ बी० सी* में लेसीडोनियां वालों ने एथेन्स पर अधिकार जमा लिया और नगर की रक्षा करनेवाली चारों ओर की दीवारों को भस्म करा दिया। प्रबन्ध कारिणी सभा का पता भी न रहा और क्रितियास ने लिसिन्डर की सहायता से धनवानों का राज्य स्थापित कर दिया। यह समय बड़ा ही भयानक था क्योंकि राज्य कर्त्ता अपने प्राचीन शत्रुओं को मारने और प्रजा को लूटने पर उतारू थे। यह लोग चाहते थे कि हम अपने कुकर्मों में अधिक से अधिक लोगों को सम्मिलित करलें। इसी विचार से उन्होंने एक दिन सुकरात और चार अन्य पुरुषों को बुलवा भेजा और उनके आजाने पर आज्ञा दी कि सेलेमिस स्थान से लीवन (Leon) नामी पुरुष को पकड़ लाओ वह मारा जावेगा। अन्य चार तो डरके कारण आज्ञापालन कर मुक्त हुए। परन्तु आत्मवीर सुकरात ने कह दिया कि जिस कार्य को करने में मेरी आत्मा साक्षी नहीं देगी उसे मैं नहीं करूंगा और यह कह कर घर को चला गया। क्यों न कहता, जब दुष्ट लोग नहीं मानते तो वीरों का यही कर्त्तव्य है। पहिले और भी एक समय पर सुकरात ने क्रितियासको चिड़ा दिया था इसका कारण यह था कि सुकरात क्रितियास के प्रबन्ध के अवगुण नवयुवकों को सुनाया करता

*ईसा के सन् से पहिले समय को बी० सी० कहते हैं।

था जिससे यह लोग क्रितियास को घृणा से देखने लगे थे।

[६]

तर्क और उपदेश

न्यायालय की कार्यवाही के बीच में कहा गया है कि एक समय (जिसकी ठीक २ मिती अज्ञात है) शेरोफ़न * डेल्फ़ी को गया और वहां जाकर पूछा कि संसार में सुकरात से भी अधिक बुद्धिमान कोई पुरुष है वा नहीं ! तब वहां की देवी ने उत्तर दिया कि कोई नहीं है। न्यायालय में अपनी निरपराधता सिद्ध करते हुये सुकरात कहता है कि मैं लोगों से तर्क इसी कारण करता हूं कि देव्योत्तर की सत्यता की परीक्षा भलीभांति करलूं। यद्यपि इस देव्योत्तर ने सुकरात को वास्तविक में बुद्धिमान और परोपकारी नहीं बना दिया था तथापि इसी के कारण उसका ध्यान परोपकार और देश सेवा की ओर बहुत कुछ झुक गया था। अतः हमको यह बात समझ लेनी उचित है कि सुकरात ने इस उत्तर की छाया में रहकर अपने तर्क के यथार्थ कारण को छिपा लिया था। तर्क करने से चरित नायक का अभिप्राय देव्योत्तर (Delphic oracle) की सत्यता परखने का नहीं था किन्तु उसने इस तर्क ही द्वारा लोगों की अज्ञानता को प्रगटकर दिखायाथा। सुकरात कहता है, 'ईश्वरने मुझे आज्ञा दी है कि मैं लोगों की प्रत्येक बात में, उत्तर में, स्वप्न में परीक्षा करूं। अतः मैं चुप नहीं रह सकता क्योंकि ऐसा करने में ईश्वर की आज्ञा का पालन नहीं कर सकूंगा।' इस विचार को मन में रखकर महापुरुष ने तर्क आरम्भ किया और लोगों

के क्रोधित होने पर भी निराश होकर उसे नहीं त्यागा। यह ठीक २ नहीं कहा जा सकता कि इस महामति ने लोगों की अज्ञानता को कब समझ लिया था, परन्तु बहुतसी बातों से जान पड़ता है कि ईसा से ४२३ वर्ष पहिले वह इतना नामी और प्रशंसित होगया था कि अरिस्तोफ़ानस ने एक पुस्तक रची जिसमें सुकरात की मनमानी हंसी उड़ाई है। आत्म-परीक्षा करना तो सुकरात ने उपरोक्त तिथि से नौ वर्ष पूर्वही आरम्भ करदिया था।

यद्यपि सुकरात नवयुवकों को सच्ची शिक्षा दिया करता था परन्तु इस शिक्षा के बदले में *सूफ़ी लोगों की तरह द्रव्य स्वीकार नहीं करता था। वह चाहे जिस पुरुष से जो उसकी बात को ध्यान पूर्वक सुनता था बात चीत किया करता था। चाहे श्रोता धन हीन हो वा धनवान हो। कभी तो बड़े २ राज्य कर्मचारियों से, कभी शास्त्रज्ञों से, कभी दुकानदारों से और कभी चर्मकारों से वह बातें करता था और सदैव नगर में रहता था। वह कहा करता था 'मैं विद्या का प्रेमी हूं लोगों से नगर में सम्भाषण करके विद्या प्राप्त कर सकता हूं, परन्तु खेत और वृक्ष मुझे विद्या नहीं दे सकते'। उसकी जीवनी से प्रतीत होता है कि वह अपना सारा समय लोगों के साथ सम्भाषण करने में ही व्यतीत करता था यहाँ तक कि उसने अपने निजी कार्यों को भी छोड़ रखा था जिसके कारण वह धनहीन होगया था। चरितनायक ने स्वयं कोई संस्था नहीं स्थापित की थी किन्तु उसके प्रेमी चहुं ओर से अपने

* वह लोग जो कि असत्य बातों को सत्य सिद्ध करने की व्यर्थ चेष्टा करते थे।

ही आप इकट्ठे होगये थे।

[७]

सुकरात के विषय में प्लेटो का विचार

प्रेटो ने एक पुस्तक लिखी है जिसमें उसने अल-कीबाइड्स नामी पुरुष का चरित वर्णन किया है और सुकरात के विषय में अपने निजी विचार इसी पुरुष की जिह्वा द्वारा वर्णन किये हैं। उस पुस्तक में अलकीबाइड्स कहता है 'मैं सुकरात की प्रशंसा एक प्रतिमा से उसकी समानता करके आरम्भ करूंगा। मैं समझता हूं. सुकरात विचार करेगा कि मैंने उसकी हंसी उड़ाने के लिये उसको प्रतिमा बनाया है, परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि सत्य को प्रगट करने के हेतु मैंने ऐसा किया है। अतः मैं कल्पना करता हूं कि सुकरात उन मूर्त्तियों के सदृश है जो कि दुकानदारों के यहां पर विक्रियार्थ रखी रहती हैं। उन्हें बाहर से देखने पर मालूम होता है कि बांसुरी लिये हुए मूर्तियां खड़ी हैं परन्तु खोलने पर भीतर देवमूर्त्तियां दिखाई देती हैं स्यात् सुकरात तुम भी मेरे ऐसा कल्पित करने से सहमत होगे। क्या तुम यह कहते हो कि तुम्हारा रूप इन मूर्त्तियों का सा नहीं है? अब सुनो कि अन्य बातों में उन मूर्त्तियों से किस प्रकार मिलते हो। क्या तुम सदैव उदासीन नहीं रहते हो? यदि तुम इस बात को अस्वीकार करोगे तो मैं साक्षी उपस्थित करूंगा। क्या तुम बांसुरी बजानेवालों के समान बांसुरी नहीं बजाया करते? क्योंकि गान विद्या में प्रवीण लोग तो मनुष्यों को वाणी द्वारा

आकर्षित करते हैं जो कोई गवैया (चाहे प्रवीण हो वा न हो) गान आरम्भ करता है तो वह गान ही की प्रकृति द्वारा लोगों के मन को आकर्षित कर लेता है और नास्तिकों के हृदयों में ईश्वर की भक्ति उत्पन्न करदेता है परन्तु तुम इन सब बातों को बिना बांसुरी के ही प्राप्त करलेते हो। क्योंकि जब कभी हम पैरीकिल्स राजनेता की वक्तृता सुनते हैं तो बहुत चिन्ता नहीं करते किन्तु जब कोई तुमको बोलते हुए सुनता है अथवा किसी अन्य व्यक्ति को चाहे वह चतुर वक्ता हो वा न हो, तुम्हारे शब्द पुनरुच्चारण करते सुनता है तो वह अति विह्वल होजाता है और उसके हृदय पर तुम्हारी बातों का अमिट प्रभाव पड़ जाता है।

'यदि मुझे लोग पागल सा न समझते तो मैं शपथ द्वारा तुम्हें विश्वास दिला देता कि उसकी वक्तृता सुनकर मेरा हृदय अकुला जाता है (जैसे कि इष्टदेव को मनानेवाले की मदिरा मस्त कीसी दशा होजाती है) मेरे नेत्रों से जल बहने लगता है और मैं अपने को तुच्छ समझने लगजाता हूं। मैंने बड़े २ वक्ताओं की लम्बी चौड़ी मधुर वक्तृताएं सुनी हैं किन्तु मेरी ऐसी दशा कभी नहीं हुई है। इस गायक ने मेरे ऊपर ऐसा अधिकार करलिया है कि मुझे अपना जीवन व्यतीत करना कठिन प्रतीत होता है। सुकरात तुम इस बात को अस्वीकार मत करो क्योंकि यदि मैं अब भी तुम्हारी वक्तृता सुनने बैठ जाऊं तो ज्यों की त्यों वही दशा होजावेगी। क्यों-कि मित्रो! सुकरात मुझ से कहला लेता है कि मैं आत्मसुधार न करके दूसरों के सुधार करने की जो चेष्टा करता हूं वह भूल है। सुकरात के सन्मुख न तो मैं उसकी बातकोही समझता

हूं और न उसकी शिक्षा का पालन करने से निषेध करता हूं परन्तु जब मैं बाहर जाता हूं तो चपल लोग मेरी झूठी बड़ाई करके मुझे उसकी सारी शिक्षा भुला देते हैं। अतः जब कभी मैं सुकरात को देख लेता हूं तो लज्जा के कारण आड़ में हो जाता हूं क्योंकि मैंने उसकी आज्ञाका पालन नहीं किया है। इसी से मैं कभी २ यह भी चाहता हूं कि यह मनुष्यों के बीच में से कहीं चला जावे परन्तु ऐसा होजाने पर मुझे और भी अधिक कष्ट मालूम होगा। सो मेरी दशा सांप और छछूंदर की सी होरही है क्योंकि मुझे यह नहीं सूझता कि क्या करूं?

अब आप देखें कि वह मूर्त्तियों से किस प्रकार मिलता जुलता है और उसमें एक कैसी आश्चर्ययुक्त बात है? समझ लीजिये कि आप लोगों में से किसी को उसका स्वभाव नहीं मालूम है क्योंकि मैं जानता हूं इस कारण आपको भले प्रकार समझा दूंगा। सुकरात सच्चे हृदय से स्वरूपवानों व ज्ञानवानों के साथ मैत्री स्वीकार करता है परन्तु इसके साथ ही यह भी कहता है कि मैं तो अज्ञानी हूं यह एक हंसा देनेवाली बात है। यही बाहिरी खोल है जिससे सुकरात ने अपने को ढंक लिया है यद्यपि हम सुकरात की खोल को पृथक कर देखें तो भीतर श्रेष्ठ स्वभाव और बुद्धिमानी ही दिखाई देगी। सुकरात धन, बाहिरी स्वरूप और सांसारिक बड़ी २ वस्तुओं की कुछ भी चिन्ता नहीं करता है और इन वस्तुओं की प्रशंसा करनेवाले हम लोगों को भी तुच्छ जीव समझता है। परन्तु उसकी आन्तरिक श्रेष्ठ बातें उसी समय दिखाई देती हैं जब कि वह अपनी वक्तृता सुनाता है, इन वस्तुओं को मैंने देखा है। यह इतनी शोभायमान और

बहुमूल्य हैं कि सुकरात की आज्ञा को ईश्वराज्ञा समझकर पालना उचित है।

एक समय हम सब लोग पोटिडिआ की लड़ाई में थे कि हमारी भोजन सामग्री निवट गई और चारों ओर से आपत्तिओं की भरमार होने लगी। परन्तु सुकरात ने इन सब को सहर्ष सहन किया। जब बहुत सा भद्दा खाद्य पदार्थ हमारे हाथ लगा तो अकेला यही धीर पुरुष उसे प्रसन्नचित्त होकर खाता हुआ दिखाई पड़ा। लोगोंने बहुत कुछ कहा सुनी करके इसको सब से अधिक मदिरा पिलादी परन्तु जिस वस्तु का वह कभी सेवन नहीं करता था उसके पीने से भी उसके मुख पर आलस्य और तन्द्रा नहीं दिखाई दी। एक दिन शीत अधिक खिसल रहा था और बरफ़ पड़ रही थी, लोग बाहिर नहीं निकलते थे और यदि कोई निकलता भी था तो कम्बल और शीत रक्षक पोशाक धारण करके धीरे २ चलता था। परन्तु सुकरात अपने प्रति दिन के अङ्ग रक्षा को धारण कर बड़े वेग से चला तब लोगों ने यह समझकर कि यह हमारी हंसी उड़ाता है उसके ऊपर क्रोध प्रगट किया।

एक दिन सबेरे सुकरात एक वृक्ष के नीचे खड़ा गूढ़ विचार में पड़ा हुआ दिखाई दिया। दोपहर को भी वह उसी दशा में था यहां तक कि लोग खाना खाकर रात को सो रहे परन्तु यह वहीं पर खड़ा रहा। दूसरे दिन सबेरे अपने प्रश्न का उत्तर निश्चय कर सूर्य देव को प्रार्थना सहित प्रणाम करके उस स्थान से हटा। उसकी यह आश्चर्यजनक घटनाएं स्मरण रखने योग्य हैं।

परन्तु मुझे सुकरात की रण वीरता का भी वर्णन करना

उचित प्रतीत होता है। पोटिडिश्रा की लड़ाई में मैं ही सेनापति था, जब मैं गिर पड़ा तो अकेला सुकरात ही निकट खड़ा हुआ मेरे शरीर व शस्त्रों की रक्षा करता रहा। विजय के अन्त में जब अन्य सेनाधिकारियों ने मुझको वीरता का पुरस्कार देना निश्चय किया तो मैंने कहा कि विजय के लिये सुकरात को पुरस्कृत करना चाहिये, परन्तु सुकरात! मुझे भलीभांति याद है कि प्रथम तुमने ही कहा कि पुरस्कार तुमको न देकर मुझे ही दिया जावे।

जब डेलियम (Delium) की लड़ाई में हमारी हार हो गई तो पीछे का वृत्तान्त भी सुनने योग्य है। उस लड़ाई में मैं तो अश्वरोही सैनिकोंमें था और सुकरात पैदलोंमें था और इस पर भी उसके ऊपर शास्त्रों का भारी बोझा लदा हुआ था। जब सुकरात और लेशेज़ साथ २ लौट रहे थे तो दैवयोग से मैं आ निकला और मैंने इन दोनों से साहस बांधकर प्रसन्न चित्त रहने की प्रार्थना की। घोड़े पर सवार होने के कारण इस विपत्ति काल में सुकरात के दिखाए हुए अपूर्व दृश्य को मैं ही भले प्रकार देख सकता था उस समय सुकरात शान्ति में सब से अधिक प्रशंसनीय था। वह शान्त चित्त होकर ही शत्रुओं और मित्रों की ओर देखता हुआ वीरता से कार्य करता रहा। शत्रु डर गये कि सुकरात और उसके साथियों पर ऐसी अवस्था में आक्रमण करना सरल नहीं है। इस प्रकार वह सब लोग बेखटके रण से लौटे। तब अरिस्तोफ़ानस की पुस्तक क्लाउड्स को पढ़कर मुझे निश्चय होगया कि यद्यपि उक्त मनुष्य ने तो सुकरात की हंसी की है तथापि वह वास्तव में ऐसा ही वीर है जैसा कि पुस्तक से प्रतीत होता है।

अनेक गुण एक २ करके किसी न किसी मनुष्य में मिलते हैं परन्तु वह सब के सब सुकरात में ही एकत्रित दिखाई देते हैं। सुकरात में सर्वोपरि गुण यह है कि इसकी समानता करनेवाला प्राचीन वा वर्त्तमान काल में कोई भी नहीं मिलता। ब्रेसीडाइड्स और अचिलीज़ यह दोनों वीर एक से हैं। नेस्टर और एन्टेनर (राजनेता) यह भी एक दूसरे से मिलते हैं, परन्तु इस अद्भुत वीर की समानता करनेवाला कोई नहीं दिखाई देता केवल उन मूर्त्तियों को छोड़कर जिनसे मैंने उसकी अभी समानता की है। जब तुम सुकरात की वक्तृता सुनोगे तो वह बड़ी भद्दी मालूम होगी क्योंकि वह सदैव अछूत जातियों ही के विषय में बकता रहता था और इसके अतिरिक्त उसकी भाषा भी गंवारी और लम्बे चौड़े शब्दों से रहित है। किन्तु यदि आप उसकी वक्तृता के आशय को लेकर ध्यान दें तो वह अति मनोहर और आत्मिकोन्नति व मोक्ष प्राप्ति का मूल साधन प्रतीत होगी। इन्हीं कारणों से मैं सुकरात की प्रशंसा करता हूं।

---

[८]

सूफ़ी लोग और सुकरात की फ़िलासफ़ी।

सुकरात के पूर्व शास्त्रज्ञों का ध्यान चारों ओर से प्राकृतिक नियमों का अनुसन्धान करने में ही लगा रहा था। उन्होंने अपने ऊपर विश्व को संगठित वस्तु ठहराने का भार लेलिया था। उन्होंने सृष्टि के स्वभाव की भी खोज की थी और अग्नि, जल, वायु आदि तत्वों का भी ज्ञान प्राप्त करना आरम्भ कर दिया था। वे लोग ऐसे प्रश्नों पर कि सर्व वस्तुयें किस प्रकार

बनती बिगड़ती हैं। केवल विचार ही विचार करते रहे थे। परन्तु ४५० बी० सी० के लगभग उनमें से सर्वसाधारण का विश्वास उठ गया क्योंकि उस समय एथेन्स निवासी मानसिक व राजनैतिक प्रश्नों की ओर झुक पड़े थे और उनका असम्भव प्रतीत बातों में से विश्वास जाता रहा था। परन्तु इन शास्त्रज्ञों के पास इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं था क्योंकि यह लोग इस ओर विचार ही नहीं करते थे।

उस समय सर्व जनता को जो मानसिक व राजनैतिक ज्ञान की आवश्यकता होरही थी वह नये ही उठ खड़े हुए सूफ़ी लोगों ने पूर्ण की, यह लोग द्रव्य लेकर शिक्षा प्रदान करते थे। इन शिक्षकों की शिक्षा व आत्मोन्नति के विषय में विपरीत सम्मतियां हैं जिनका वर्णन करना हमारे प्रसङ्ग के बाहर है। हमको यही कहना है कि सूफ़ी लोग सर्व साधारण को प्राचीन अधूरे विचारों की ही शिक्षा देते थे जिसके प्रति सुकरात सदैव झगड़ा ठानता रहा था क्योंकि उनकी शिक्षा नियमानुकूल नहीं थी। उनको सर्व साधारण के आन्तरिक अवगुणों का कुछ भी ज्ञान नहीं था इसी कारण उन्होंने लोगों का सुधार करने की चेष्टा नहीं की थी। वे अपने शिष्यों को सत्य की शिक्षा ही नहीं देना चाहते थे किन्तु उनकी इच्छा नव युवकों को प्रचलित राजनीतिक व सामाजिक दृष्टि से योग्य बनाने की थी। उन्होंने केवल उस समय की कहावतों को इकट्ठा करके अपनी शिक्षा आरम्भ करदी थी। प्लेटो कहता है कि यह लोग उस मनुष्य के समान थे जिसने किसी जंगली जानवर को वशीभूत करके उसे प्रसन्न करने व उससे बचने की युक्ति का अध्ययन करलिया हो और इसी युक्ति को ज्ञान

समझता हो। यह लोग उसी बात को अच्छा समझते थे जिससे इनके शिष्य प्रसन्न हों अन्यथा और सब को बुरा कहते थे। उनकी सारी फ़िलासफ़ी इन्हीं बातों पर निर्भर थी।

परन्तु सुकरात की फिलाफ़ीऐसे प्रश्नों का उत्तर जानने पर अवलम्बित थी जैसे पवित्रता क्या है? अपवित्रता क्या है? उच्च क्या है? नीच क्या है? न्याय परायणता क्या है? अन्याय क्या है? बुद्धिमत्ता क्या है? मूर्खता क्या है? साहस क्या है? भय क्या है? राज्य क्या है? राज्यनेता कौन है? राज्य प्रणाली क्या है? राज्य करने की योग्यता किस शिक्षा से प्राप्त हो सकती है?

उसका विचार था कि जो लोग इन प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं वही ज्ञानी हैं शेष अज्ञानी हैं जो कि गुलामों से किसी प्रकार अच्छे नहीं हैं। उसके कई प्रश्नों के उत्तर लेटो की निम्न लिखित अंग्रेज़ी भाषा की पुस्तकों में प्रगट किये गये हैं:—

प्रश्न	नाम पुस्तक
साहस क्या है?	Laches
सहन शीलता क्या है?	Charmides
वित्रता और शुद्धता क्या है?	Dialogne of Enthyphron
मित्रता क्या है?	Lysis

सुकरात की फिलासफ़ी मनुष्य सम्बन्धी है परन्तु उसके र्व शास्त्रज्ञों की प्रकृति सम्बन्धी, और सूफ़ी लोगों से उसका वल शास्त्र के दृष्टि बिन्दु में मत भेद है सूफ़ी लोगों का देश्य केवल इधर उधर की बातों को इकट्ठा करना था

परन्तु सुकरात का उद्देश्य मनुष्यों का सुधार करने का था
सूफ़ी लोग मनुष्य के सम्बन्ध में धड़ा धड़ ऐसे शब्दों
प्रयोग करते थे जिनका ठीक २ अर्थ उनको स्वयं ही अज्ञा
था। उन्हों ने इन शब्दों का अर्थ जानने के लिये कुछ
कष्ट नहीं उठाया था वे तो उनके प्रयोग कर लेने ही
संतुष्ट थे चाहे ऐसा करने में वह ठीक हों वा नही। संक्षेप
सुकरात वास्तव में सत्य खोजक था परन्तु सूफ़ी लोग ट
कमाने के ही पंडित थे।

---

(६)

लोगों का द्वेष

जिस समय सुकरात कई लड़ाइयों में अपनी वीरता दि
रहा था साथ ही साथ अरिस्तोफ़ानस [जो कि सदा सुकर
से द्वेष भाव रखता था] ने एक पुस्तक लिखी जिसमें उ
चरित नायक की फ़िलासफ़ी आदि की मनमानी हंसी उड़
है। सूफ़ी लोगों की फ़िलासफ़ी को अरिस्तोफ़ानस अत्य
घृणा की दृष्टि से देखता था क्योंकि वह इन लोगों
नास्तिक और आत्मबलहीन समझता था। वह इ
परम्परा से चली आई बातों में विश्वास करता था और
लोगोंको जो कि इन सब बातों को विनातर्क उठाये स्वीकार
लेते थे, अच्छा समझता था। उसने अपनी पुस्तक में स
लोगों और स्वतन्त्र विचारवालों पर आक्रमण किया
उसने इस पुस्तक में सम्पूर्ण हंसी का केन्द्र सुकरात ही
बनाया है जिसका कारण यह प्रतीत होता है कि इस

पुरुष का स्वरूप निराला था जिसे देखकर लोगों को हंसी आती थी आंखें बड़ी २, नासिका चपटी और पोशाक ढीली ढाली थी। प्रत्येक मनुष्य इस महा मूर्ति से जो कि गली गली में दिखाई देती थी भली भांति परिचित था। आरिस्तोफ़ानस को इस बात का ध्यान नहीं था कि सुकरात का मुख्य उद्देश्य सूफ़ी लोगों का विरोध करना है, तभी तो उसने झूठी हंसी उड़ाई है। अरिस्तोफ़ानस के लिये यही बहाना संतोषजनक था कि सुकरात प्राचीन विचारों में बिना उसकी परीक्षा किये विश्वास नहीं करता है अतः हंसी उड़ाये जाने योग्य है। न्यायालय के पाठ में जो आगे चलकर क्लाऊड्स के विषय में कहा गया है वह अक्षरशः ठीक है। अरिस्तोफ़ानस ने उस पुस्तक में शास्त्रज्ञों और सूफ़ी लोगों की हंसी उड़ाई है और इन दोनों को ही मिलाकर सुकरात का चरित वर्णन किया है। उसमें दिखाया गया है कि सुकरात हर समय असम्भव बातें किया करता है क्योंकि यूनान के प्राचीन निवासी समझते थे कि पृथ्वी की चाल और प्रबन्ध इत्यादि सब बातें ज़ेअस देवता के आधीन हैं परन्तु सुकरात कहता था कि यह ईश्वरीय नियम बद्ध है और पृथ्वी सूरज के चारों ओर परिक्रमा देती है।

अरिस्तोफ़ानस ने दिखाया है कि सुकरात में असत्य को सत्य सा प्रगट करने की बुरी बान पड़ गई थी। उसने यह भी लिखा है कि सुकरात पुत्रों को शिक्षा देता है कि अपने पिताओं को पीटो क्योंकि यह तो एक भ्रम की बात पहिले से चली आ रही है कि पिता ही पुत्र को पीटे। पिता और पुत्र एक दूसरे पर बराबर २ स्वत्व रखते हैं। आगे चलकर यह कहा है कि

सुकरात ने जान बूझकर देवताओं के प्रति पाप किया है और इसी से नास्तिक बन गया है। यद्यपि एक शास्त्रज्ञ और एक सूफ़ी में बड़ा अन्तर था तथापि अरस्तोफ़ानस ने इन दोनों को मिलाकर सुकरात बना दिया है सुकरात की वास्तविक जीवनी पढ़ने से ज्ञात होता है कि उसके शत्रुओं ने द्वेष ही के कारण यह दोषारोपण किये थे। अतः अब इस बात के कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि क्लाऊड्स एक झूठा, मन गढन्त उपन्यास है। इन सब बातों से यही सिद्ध होता है कि इस पुस्तक के लिखे जाने के पूर्व ही सुकरात ने तर्क द्वारा यूनान देश में यश प्राप्त कर लिया था।

[१०]

अन्तिम जीवन

अब हम उन बातों पर पहुंच गये हैं जो आगे लिखे सम्भाषणों में वर्णित हैं। इसमें सन्देह नहीं कि सुकरात अपने समय का यूनान देश में सर्वोत्तम पुरुष था उसके इसी उच्च पद प्राप्त करने पर अधिकाँश लोगों को द्वेष होगया था और इसी द्वेष का फल यह हुआ कि ३९९ बी० सी० अर्थात् ३९९ वर्ष ईसा के पूर्व में मैलीतस आदि कई बड़े २ राज नेताओं ने उसके ऊपर नवयुवकों का चाल चलन बिगाड़ने का अभियोग चलाया जिसके के कारण अन्त में सुकरात को मृत्यु दण्ड दिया गया। उस समय एथेन्स का प्रधान पुजारी किसी धार्मिक कार्य के लिये एक द्वीप में गया हुआ था इस कारण मृत्यु के पहिले चरित नायक को एक मास तक कारागार में बन्द रहना पड़ा। मृत्यु के लिये नियत तिथि से एक रात्रि पहिले क्रितोंने जो कि सुक-

रात का परम मित्र था वहां से भाग जाने की सम्मति दी परन्तु सुकरात ने इस काम को न्याय और आत्म विरुद्ध समझ कर नहीं किया । तत्पश्चात् उसने प्रसन्नता पूर्वक विष का प्याला पिया और मृत्यु शय्या पर टांग पसार कर सोगया। उसने यदि अपना वाद विवाद करना छोड़ दिया होता तो अवश्य ही वह मत्यु दण्ड से बच जाता किन्तु उसने न्यायाधीशों से स्पष्टतया कह दिया कि (I can not hold my peace or that would be to disobey God) मैं चुप नहीं रह सकता क्योंकि ऐसा करने से मैं ईश्वरकी आज्ञा का उलंघन करूंगा।

उसने देशवासियों के सुधार के सामने मृत्यु की कुछ भी चिन्ता नहीं की। उसका तो सिद्धान्त था कि 'मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये, जीता है वह जो मर चुका स्वदेश के लिये, ।

उसकी जीवनी से हमें आत्मबल की बड़ी भारी शिक्षा प्राप्त होती है। वह भलाई के सामने सब वस्तुओं को तुच्छ समझता था जैसा कि उसने अपना मुक़द्दमा होते समय न्यायालय में कहा था,

"I spend my whole life in going about and persuading you all to give your first and cheapest care to the perfection of your souls, and not till you have done that to think of your bodies or your wealth; and telling you that virtue does not come from wealth, but that wealth and every thing which men have, comes from virtue."

अर्थात् मैं अपना सारा जीवन तुम लोगों के पास जाने और तुमको सबसे पहले अपने आत्म सुधार की ओर ध्यान

देने के लिये बाध्य करने में लगाता रहा कि जब तक तुम आत्म सुधार न करलो तब तक अपने शरीर और धन की ओर बिलकुल ध्यान मत दो। और सर्वदा कहता रहा कि धन के द्वारा गुण नहीं प्राप्त होते परन्तु धन और जो कुछ मनुष्य प्राप्त कर सकता है वह सब गुण के द्वारा ही प्राप्त करता है।

---

(११)

न्यायालय और दण्डआज्ञा

विरोधियों के अभियोग चलाने पर सुकरात को राज आज्ञानुसार न्यायालय में उपस्थित होना पड़ा, उसकी वर्ष की आयु में ऐसा समय उसे केवल एक ही वार देखना पड़ा था। वहां पर नियत समय तीन बराबर भागों में बांटा गया, पहिले भाग में सुकरात ने अपनी निरपराधता सिद्ध करने के हेतु वक्तृता दी, दूसरे में न्यायाधीशों ने सम्मति लेकर दण्ड नियत किया और तीसरे में फिर सुकरात ने दूसरा दण्ड अपने ही लिय नियमानुकूल चुना अब हम पहिले भाग में की बात लिखते हैं:—

सुकरात की वक्तृता—"एथेन्स निवासियो ! मैं नहीं कह सकता कि मेरे विरोधियों ने आपके हृदय पर कैसा प्रभाव डाला है किन्तु उनकी बातें बाहिरी रूप से इतनी सत्य सी मालूम होती हैं कि मैं अपना आपा भूल गया परन्तु फिर भी वास्तव में उनका एक भी शब्द सत्य नहीं है। उनकी सारी असत्य बातों में से अत्यन्त आश्चर्य जनक यह है कि मैं सूफ़ी लोगों की भांति चालाकी से वाद करता हूं और तुमको मेरी बातें सुनते समय

सावधान रहना चाहिये कि कहीं मैं तुमको पट्टी न देदूं । ऐसा कहते समय उनको लज्जा भी तो नहीं आई क्योंकि मेरे बोलते ही आप लोगों पर सत्य विदित होजायगा और मैं इस बात को सिद्ध करदूंगा कि मैं किसी प्रकार चालाक नहीं हूं; यदि वह चालाक मनुष्य कहने से उस मनुष्य की ओर संकेत करे जो सत्यवादी हो तब तो मैं अवश्यही उनके कहने से भी अधिक चालाक हूं । मेरे विरोधियों ने एक भी शब्द यथार्थ नहीं कहा है परन्तु आप सारा सत्य मुझ से सुनेंगे । आप लोगों को मुझ से कोई शब्दों से अलंकृत और मनमोहनी वक्तृता की आशा नहीं करनी चाहिये जैसी कि उन्होंने आपके सन्मुख दी है । बिना पहिले से तयारी किये ही मैं आपको सब बातों का यथार्थ बोध कराडूंगा क्योंकि मुझे अपने निर-पराधी होने का पूर्ण विश्वास है । अतएव आपको अन्यथा विचार करलेना अनुचित होगा क्योंकि वास्तव में आपके सन्मुख मुझे बुढ़ापे में झूठ बोलना कठिन और लज्जास्पद मालूम होता है । परन्तु एथेन्स निवासियो ! मैं आप से एक प्रार्थना स्वीकृत कराना चाहता हूं, वह यह है कि यदि मैं आप लोगों के सन्मुख वैसी ही बोलचाल का प्रयोग करूं जैसा करते हुए कि आप लोगों ने मुझे सार्वजनिक स्थानों में देखा है तो आप लोग आश्चर्य न करें । अब आप ध्यान पूर्वक सत्य को सुनिये । मेरी अवस्था सत्तर वर्ष से अधिक है और मेरे लिये यह पहिला ही समय है कि मैं यहां न्यायालय में आया हूं अतएव यहां की बोलचालसे सर्वथा अनभिज्ञहूं । यदि मैं विदेशी होता तो आप लोग मुझे अपनी मातृभूमि की बोलचाल का प्रयोग करते देख अवश्य क्षमा प्रदान करते किन्तु यह बात तो है

नहीं। इस कारण आप किसी प्रकार मेरी बोलचाल के ढङ्ग पर अधिक ध्यान न दीजिये, किन्तु सत्य बातों को ही ध्यान पूर्वक सुनते चलिये, यही सच्चे न्यायाधीशों का कर्त्तव्य है।

एथेन्स निवासियो! मुझे प्रथम तो अपने को प्राचीन विरोधियों के लगाये अभियोग के निरपराधी ठहराना है और पीछे से वर्त्तमान विरोधियों के प्रति, विषय में कुछ कहना है क्योंकि बहुत से लोग कई वर्ष से मेरे विरुद्ध आपके कानों में मंत्र फूंकते रहे हैं और ऐसा करते हुए उन्होंने एक भी शब्द यथार्थ नहीं कहा है, इसी कारण मैं उसे अनायतस (वर्तमान विरोधी) के सामने भी अधिक डरता हूं। किन्तु मित्रो! दूसरे इनसे भी विकट हैं क्योंकि वे लोग ऐसी बातें कह कर कि 'यह पर एक सुकरात नामी बड़ा चालाक मनुष्य है वह सदा पृथ्वी आकाश की बातों की परीक्षा करता रहता है और असत्य को बनावटी बातों से सत्य सिद्ध कर देता है' आपको बचपन से मेरा विरोधी बताते रहे हैं और इसके अतिरिक्त आप उस अवस्था में प्रत्येक बात का सुगमता से विश्वास कर लेते थे ऐसी गप्पें उड़ानेवालों का मुझे बड़ा भय है क्योंकि प्राकृतिक घटनाओं के जिज्ञासु को यहां के निवासी नास्तिक समझते हैं। सब से अधिक अन्याय की बात तो यह है कि मैं उनके नाम भी नहीं जानता इस कारण अरस्तोफ़ानस को छोड़कर औरों में से एक को भी आपके सन्मुख बुलाकर तर्क नहीं कर सकता। इस प्रकार मुझे परछाइयों का ही सामना करना है जिनसे प्रश्न करने पर उत्तर दाता कोई नहीं है। इस प्रकार मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरे विरोधी दो प्रकार के हैं एक तो मेलीतस और उसके साथी दूसरे प्राचीन जिनका

कि मैं आपको अभी परिचय दे चुका हूं। आपकी आज्ञा से मैं अपने को प्रथम तो प्राचीन विरोधियों के प्रति निरापराधी सिद्ध करूंगा क्योंकि उनके ही लाये हुए अभियोग आप लोगों ने पहिले सुने हैं।

अब मैं थोड़े से प्राप्त समय में ही अपना पक्ष आरम्भ करता हूं जिसमें मैं इस बात का उद्योग करूंगा कि आपके हृदय से चिरस्थायी झूंठे प्रभाव को दूर करूं। यदि ऐसा करने से आपका हित हुआ तो मैं आरम्भ करता हूं, परिणाम तो परम पिता के ही आधीन है। थोड़े से समय में इतना कठिन कार्य करना असम्भव सा प्रतीत होता है किन्तु मुझे तो राजनीति का पालन करना ही उचित है।

मैलीतस ने आपके सन्मुख जो अभियोग लिखकर उपस्थित किया है जिसके कारण यह सारा प्रभाव पड़ा है उसको देखना हमारा प्रथम कार्य होगा। वह कौनसी गप्पे हैं जिनको मेरे शत्रु चारों ओर फैला रहे हैं? मैं यह कल्पना किये लेता हूं कि यह लोग नियमानुसार मेरे प्रति अभियोग चला रहे हैं और उनके लाए हुये हस्त लिखित दोष को पढ़ता हूं जो कि निम्न प्रकार हैं। "सुकरात एक दुष्ट मनुष्य है जो सदैव पृथ्वी व आकाश की बातों का अनुसन्धान करता रहता है जो असत्य बातों को झूठे तर्क से सत्य सिद्ध कर देता है और जो औरों को भी यही कहने की शिक्षा देता है"। वह लोग यही कहते हैं और अरस्तोफानस के उपन्यास में भी आपने एक सुकरात नामी मनुष्य को टोकरी में झूलते हुये और यह कहते हुए कि मैं वायु को हिला रहा हूं तथा अन्य प्रकार की व्यर्थ बातें बकते हुये जिनका मुझे कुछ भी

ज्ञान नहीं है देखा होगा । यदि कोई मनुष्य इस प्राकृतिक विद्या को जानता है तो मैं उसका विरोध नहीं करता हूं परंतु मुझे विश्वास है कि मैलीतस मेरे ऊपर यह दोषारोपण नहीं कर सकता । सच मुच मुझे इन बातों से कोई सम्बन्ध नहीं है और इसके लिये आप सबही मेरे साक्षी हैं । आप में से बहुतेरों ने मुझे बात चीत करते हुये सुना होगा अब मेरी उन से यह प्रार्थना है कि यदि उन्हों ने यह बातें कहते हुये मुझे सुना है तो अपने २ पड़ोसी को सूचना दे दें इस से आपको यह भी सिद्ध हो जावेगा कि मेरे विषय की उड़ाई हुई अन्य बातें भी असत्य हैं ।

मैं स्वयं लोगों को शिक्षा देकर द्रव्य प्राप्त करना जैस कि जार्जियास तथा हिपियास करते हैं अच्छा समझता हूं किन्तु यदि आपने मेरे विषय में यह बात सुनी है तो वह निर्मूल है क्यों कि यह लोग चाहे जिस नगर में जाकर नवयुवकों को उनकी समाज से फुसला कर अपनी ओर आकर्षित करलेते हैं और युवक भी इनसे मिलकर इनके ऊपर व्यर्थ द्रव्य लुटाना अपना अहोभाग्य समझते हैं । पेरस स्थान से एक और भी चालाक मनुष्य इस समय एथेन्स में आया हुआ है । संयोग से मैं एक दिन हिपियास के पुत्र केलियास के पास गया इसने अपने पुत्र को सूफियों के हाथ शिक्षा दिलाने में आप सब लोगों से भी अधिक धन व्यय किया है वहां जाकर मैंने उस से कहा । "केलियास ! यदि तुम्हारे दोनों पुत्र बछड़े वा बछेड़े होते तो हम लोग उनको स्वाभाविक शिक्षा दिलाने के लिये सरलता से किसी गड़रिये वा अश्वरक्षक को ढूंढ़ लेते परन्तु यह तो मनुष्य हैं तुमने उनकी शिक्षा के लिये किसे योग्य

समझा है ? मनुष्य जाति की शिक्षा में कौन निपुण है ? संभव है कि आपने अपने पुत्रों की शिक्षा के हेतु इन बातों पर विचार किया हो। अतएव बताओ कि ऐसा कोई मनुष्य है या नहीं ?" जब उसने हां है कह कर उत्तर दिया तो मैंने पूछा "वह कौन है कहां से आया है और उसका वेतन क्या है ?" उसने उत्तर दिया उसका नाम ईविनस है वह पेरस से आया है। और उसका वेतन ३०० रुपया है। तब मैंने विचार किया कि ईविनस बड़ा भाग्यशाली है जो मनुष्यों को शिक्षा देने में प्रवीण है। यदि मैं इस विद्या को जानता होता तो पृथ्वी पर पैर न रखता किन्तु वास्तिव में एथेन्स निवासियों ! मैं इस विद्या को नहीं जानता हूं।

स्यात् आप में से कोई महाशय पूछे भी 'सुकरात तुम अवश्य ही कुछ न कुछ विलक्षण कार्य करते होंगे जिसके कारण यह बातें तुम्हारे विषय में फैलाई गई हैं यदि तुम कोई असाधारण कार्य न करते होते तो यह विपरीत बातें न फैलाई जातीं। अतएव हमें बताओ। वह कौन सा कार्य है। क्यों कि हम सच्चा हाल जाने विना न्याय नहीं कर सकते ?' इस प्रश्न को मैं उचित समझता हूं। और आपके सन्मुख इन झूठी बातों के फैलाने का मैं कारण प्रगट करने का उद्योग करूंगा। अब आप हंसी त्याग कर सुनिये कि मैंने यह बुरा नाम अपनी बुद्धिमत्ता के कारण पाया है, और इस बुद्धिमत्ता का होना मैं मानव जाति के लिये परमावश्यक समझता हूं। इस बुद्धिमत्ता में मैं अवश्य ही बुद्धिमान हूं किन्तु प्राकृतिक बुद्धिमत्ता जिसके विषय में मैं आप से पूर्व कह चुका इस बुद्धिमत्ता से अधिक श्रेष्ठ है। पहिली का मुझे कुछ ज्ञान नहीं है और यदि

कोई इसके विरुद्ध कहता है तो वह झूठ बोलता है और मेरी अप्रतिष्ठा करता है। एथेन्स निवासियो! यदि तुम मुझे अहंकार से कुछ कहते हुये देखो तो भी बीच में मत रोको। इस बात को मैं अपनी ओर से नहीं गढ़ रहा यह तो आपके एक विश्वास पात्र ने कही है। मेरी बुद्धिमत्ता की साक्षी डेलफ़ी स्थान की देवी है आप शेरोफ़न को तो जानते ही हैं वह बचपन से ही मेरे साथ रहा था आप उसके स्वभाव को भी जानते हैं कि जिस कार्य को वह आरम्भ करता था उस में तन-मन लगा देता था। एक समय वह डेलफ़ी को गया और वहां जाकर देववाणी को यह प्रश्न किया 'सुकरात से भी बढ़कर कोई बुद्धिमान है?' तो वहां की पुजारिन ने उत्तर दिया कि "कोई नहीं है"। शेरोफ़न तो मर ही गया है परन्तु उसका भ्राता जो इस समय यहां पर उपस्थित है आप लोगों को इसकी सत्यता कहेगा।

अब सुनिये कि यही बात मेरी बुराई फैलाने की मूल किस प्रकार बन गई जब मैंने यह देवोत्तर सुना तो विचार करने लगा कि ईश्वर का इससे क्या अभिप्राय है? मैं भले प्रकार जानता हूं कि मैं किञ्चित मात्र भी बुद्धिमान नहीं हूं तो ईश्वर का ऐसा कहने से क्या प्रयोजन है? वह देवता है इस लिये असत्य भाषण तो कर नहीं सकता। बहुत काल तक तो मैं देवोत्तर का आशय ही न समझ सका, अन्त में मैंने इस प्रकार खोजकी और मैं ऐसे मनुष्य के पास गया जो बुद्धिमान करके प्रशंसित था क्योंकि वहां जाकर देवोत्तर को झूठ सिद्ध करने की मुझे आशा थी। इस प्रकार वहां जाकर मैंने वाद विवाद आरम्भ किया, उस व्यक्ति का नाम बताने की कोई

आवश्यकता नहीं है। परन्तु वह एक राजनीतिज्ञ था। परिणाम यह निकला कि जब मैंने उससे बातचीत की तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह स्वयं और बहुत से श्रोता गण जो अपने को बुद्धिमान समझते थे वास्तव में अज्ञानी थे। जब मैंने उन्हें उनकी अज्ञानता दिखानी आरम्भ की तो वह सब के सब मेरे शत्रु बन गये। जब मैं वहां से चला तो विचारने लगा कि मैं इस मनुष्य से अधिक बुद्धिमान हूं क्योंकि वास्तविक तो हम दोनों में से कोई कुछ नहीं जानता किन्तु वह अज्ञानी होता हुआ भी अपने को ज्ञानी समझता है अर्थात् सत्य बात को न जानता हुआ वह बुद्धिमान नहीं और मैं अपनी अज्ञानता को समझता हूं अर्थात् मैं अपने को अज्ञानी ही समझता हूं इस प्रकार किसी अंश में मैं इस मनुष्य के सामने बुद्धिमान हूं क्योंकि मैं किसी बात को न जान कर यह नहीं कहता कि मैं अमुक बातको जानता हूं। तत्पश्चात् मैं एक दूसरे मनुष्य के पास गया जो कि बुद्धिमान समझा जाता था वहां पर भी यही फल निकला उसके पास भी मैंने कई नवीन शत्रु उत्पन्न कर लिये।

इस प्रकार मैं एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य के पास गया और मुझे ज्ञात हुआ कि मैं नित २ नये शत्रु बढ़ा रहा हूं इसके कारण मैं बड़ी असंतुष्टता और चिन्ता में निमग्न होगया किन्तु मैंने ईश्वर की आज्ञा को शिरोधार्य माना इस कारण मैं देवोत्तर का आशय जानने के हेतु कई मनुष्य के पास गया परंतु एथेन्स निवासियो! परिणाम यह हुआ कि जोलोग बुद्धिमानी में अधिक प्रशंसित थे वही तो अधिक अज्ञानी निकले और जो साधारण पुरुष थे वह शिक्षा पाने के अधिक योग्य थे।

मैंने जो चक्कर इस देवोत्तर की सत्यता जानने के लिये लगाये थे अब मैं उनका वर्णन करता हूं। राजनीतिज्ञों के पश्चात् मैं कवियों के पास इस विचार से गया कि वहां जाकर मैं अपने को अज्ञानी सिद्ध कर दूंगा। इस अभिप्राय से मैंने उनकी सर्वोत्तम कविताओं को उठाकर उनसे आशय पूछा जिससे मुझे कुछ ज्ञान प्राप्ति की भी आशा थी परन्तु मुझे कहते लाज आती है कि कविगण अपनी कविताओं का भावार्थ श्रोतागण से अधिक संतोष जनक न कह सके। इससे मैंने यह परिणाम निकाला कि यह कविताएं कवियों के निज विचार नहीं हैं। किन्तु इनको वे लोग प्राकृतिक जोश में भरकर लिखता डालते हैं परन्तु स्वयं उनका आशय नहीं समझते। कवि लोग भी मुझे राजनीतिज्ञों के समान अज्ञानी मालूम हुए क्योंकि वह अपनी कविताओं के अहंकार में अपने को अन्य बातों में भी जिनका उन्हें कुछ भी बोध नहीं था कुशल समझते थे वहां से भी पहिले की तरह अपने को किसी अंश में ज्ञानी समझता हुआ मैं चल पड़ा।

तत्पश्चात् मैं शिल्पकारों के पास गया क्योंकि मैं अपने को पूर्ण अज्ञानी समझता था और मुझे विश्वास था कि वह लोग तो मुझसे अधिक बुद्धिमान होंगे और यह बात ठीक भी निकली वे अपनी शिल्पकारी के नियमों को अच्छी तरह जानते थे परन्तु फिर भी वह कवियों की नाई अपने को अन्य बातों में भी प्रवीण समझ कर वही भूल करते थे। उदाहरणार्थ राजनीति में भी वे अपको को कुशल समझते थे। और ऐसा करने से उनका वास्तविक ज्ञान भी अन्धकार में जा छिपता था! मैंने अपने हृदय में प्रश्न उठाया कि मैं इन शिल्पकारों

की तरह शिल्पकारी में ज्ञानी बनूं तब मेरे अन्तः करण ने उत्तर दिया कि मैं ज्यों का त्यों ही भला हूं।

एथेन्स निवासियो ! इसी वाद विवाद के कारण मैंने अपने चारों ओर शत्रुदल खडा कर लिया था जिन्होंने यह मेरी झूठी अप्रतिष्ठा फैलाई है। इसी से लोग मुझे जिज्ञासु समझने लगे हैं क्योंकि वह लोग विचारते हैं कि जब बातों में मैं औरों को अज्ञानी कहता हूं उनसे स्वयं अवश्य ही ज्ञानी हूंगा परन्तु मित्र ! मैं परमात्मा को ही सच्चा ज्ञानी मानता हूं और मुझे सर्व श्रेष्ठ ज्ञानी मान कर जगतपिता का यही अभिप्राय था कि मनुष्य सर्वथा अज्ञानी है। मैं तो नहीं समझता कि वह मुझे ज्ञानी बतलाता है। परमात्मा ने मुझे सब मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान बतलाया है, किन्तु वास्तविक में पूर्ण अज्ञानी हूं अर्थात् मुझसा पूर्ण अज्ञानी भी मनुष्य जाति में सब से अधिक बुद्धिमान है जैसे अन्धों में काना राजा। परिणाम यह निकला कि जब मुझसा अज्ञानी भी मनुष्यों में अधिक ज्ञानवान है तो मानव जाति ही सर्वथा अज्ञानी है। ईश्वर के उत्तर का यह अभिप्राय है कि 'जो मनुष्य सुकरात की भाँति अपने को पूर्ण अज्ञानी समझता है वही ज्ञानी कहे जाने के योग्य है' (Thinking themselves as were children gathering pebbles on the boundless shore of the ocean of knowledge)। इसी कारण तो मैं अब भी इधर उधर हर मनुष्य के पास घूमता हूं, और जब मैं उसे अज्ञानी पाता हूं तो स्पष्ट शब्दों में कह देता हूं कि 'तुम अज्ञानी हो' क्योंकि ऐसा कहने व करने की ईश्वर ने मुझे आज्ञा दी है। मैं इस कार्य में इतना निमग्न रहता हूं

कि मुझे सर्व साधारण के व निजी कार्यों में ध्यान देने का अवसर ही नहीं प्राप्त होता है। ईश्वर में इतनी भक्ति होने के कारण ही मैं निर्धन रहता हूं।

इसके अतिरिक्त धनवान् लोगों के लड़कों के पास बहुत सा व्यर्थ समय होता है, इसलिये वह भी मेरे साथ फिरते हैं क्योंकि जब मैं लोगों की परीक्षा करता हूं तो उन्हें आनन्द प्राप्त होता है. कभी कभी यह लड़के भी मेरी तरह अन्य लोगों की परीक्षा करते हैं और इस प्रकार उन्हें भी ऐसे बहुत लोग मिलते हैं जो अज्ञानी होते हुये भी अपने को ज्ञानी कहते हैं। जब यह लड़के उन लोगों का अज्ञान प्रगट करते हैं तो वह स्वयं उनसे अप्रसन्न न होकर मेरे ऊपर कोप करते हैं कि 'सुकरात बड़ा ही नीच है, वह नवयुवकों को बिगाड़ता है। परन्तु जब उन से प्रश्न किया जाता है कि वह क्या करता है ? नवयुवकों को क्या शिक्षा देता है ! तब तो वह सुन्न पड़ जाते हैं और अपना दोष छिपाने की इच्छा से वही सुनी हुई झूठी गप्पें बखानने लगते हैं कि वह नास्तिक है और असत्य बात को उलट फेर कर बनावटी बातों से सत्य सी सिद्ध कर देता है। वह लोग वास्तविक सत्य को अर्थात अपनी अज्ञानता को प्रगट नहीं करते हैं 'वह लोग मेरे विरोधी बनकर अपनी वाक् पटुता से आप लोगों के कानों में झूठी बातें भर देते हैं ! यही कारण है जिससे मैलीतस, अनायतस व लायकन मेरे प्रति अभियोग चला रहे हैं जिनमें मैलीतस कवियों की ओर से अनायतस राजनीतिज्ञों व शिल्पकारों की ओर से और लायकन वक्ताओं की ओर से हैं और जैसा कि मैं पहिले भी कह चुका हूं कि मुझे बड़ा आश्चर्य होगा यदि

मैं इस थोड़े से प्राप्त समय में आप लोगों के हृदयों से इतने दिन के जमे हुये पक्षपात की जड़ उखाड़ने में सफल होगया। एथेन्स निवासियो! जो कुछ मैंने कहा है वही सत्य वृतान्त है इसमें से न तो कुछ छिपाया है और न अपनी ओर से कुछ नमक मिर्च ही मिलाया है। मुझे अब भी विश्वास है कि मेरी स्पष्ट कह देने की प्रकृति ही शत्रु खड़े कर रही है चाहे आप इस पर अब विचार करें चाहे पीछे किन्तु सत्य यही है।

जो कुछ मैंने अब तक कहा वह तो अपने प्राचीन विरोधियों के लाये अभियोगों से मुक्त होने के लिये कहा था परंतु अब मैं 'देश भक्त' (जैसा वह स्वयं बनता है) मैलतिस के लाये अभियोग से मुक्त होने के लिये बोलता हूं। पहिले की तरह मैं उनके भी लाये हुये अभियोग को पढ़ता हूं जो कि स्यात यह है 'सुकरात एक नीच मनुष्य है, वह नव युवकोंको बिगाड़ता है, नगर के देवों में विश्वास नहीं रखता और नवीन देवताओं की उपासना करता है, अब मैं एक बात को काटने का उद्योग करूंगा। मैलीतस कहता है कि मैं नवयुवकों को बिगाड़ता हूं परन्तु मैं कहता हूं कि वह लोगों के ऊपर अन्धाधुन्ध दोषारोपण करके आप लोगों से बड़ी भारी हंसी करता है और उसे आपकी प्रतिष्ठा का कुछ भी विचार नहीं है यद्यपि उसने देश सम्बन्धी बातों पर कुछ भी विचार नहीं किया है तदपि वह अपने को देश हितैषी कहता है। अब मैं आपके सन्मुख इस बात को भी सिद्ध करता हूं।

इधर पधारिये, मैलीतस महाशय! क्या यह बात सच नहीं कि आप नवयुवकों का चतुर होना देश के लिये अत्यावश्यक समझते हो?

मैलीतस—मैं समझता तो हूं।

सोकरात—आइये और न्यायाधीशोंको बतलाइये कि उन्हें कौन सुधारता है? तुम इन बातों में अधिक भाग लेते हो इसलिये इस बात को भी जानते होगे। तुमने मेरे प्रति अभियोग चलाया है क्योंकि तुम कहते हो कि मैं नवयुवकों को बिगाड़ता हूं, अतएव अब न्यायाधीशों को यह भी प्रगट करदो कि उन्हें सुधारता कौन है? मैलीतस! तुम मौन धारण किये हो और उत्तर नहीं देते क्या इस बात से तुम्हें लाज नहीं आती? क्या तुम्हारा मौन ही इस बात को सिद्ध नहीं करता है कि तुमने देश की बातों पर बहुत कम विचार किया है? महाशय कृपया बतलाइये कि नवयुवकों का सुधारक कौन है?

मैलीतस—देश के नियम।

सुकरात—महाशय मेरा यह प्रश्न नहीं है यह बताओ कि कौन पुरुष इन नियमों का पालन करता हुआ उन्हें सुधारता है?

मैलीतस—उपस्थित न्यायाधीश उन्हें सुधारते हैं।

सुकरात—तुम्हारा क्या अभिप्राय है क्या यह न्यायाधीश उन्हें शिक्षा दे सकते और सुधार सकते हैं?

मैलीतस—वास्तव में।

सुकरात—यह अच्छी सुनाई, तब तो हित चिन्तक बहुत हैं। और क्या यहां के उपस्थित दर्शक भी उन्हें सुधारते हैं।

मैली०—जीहां, वह भी सुधारते हैं।

सक०—मैलीतस! क्या महासभा के सदस्य भी उन्हें

बिगाड़ते हैं वा वह भी सुधारते हैं।

मैली०—वह भी उन्हें सुधारते हैं।

सुक०—तो मुझे छोड़कर प्रायः सब ही एथेन्स निवासी उन्हें सुधारते हैं। मैं अकेला ही उन्हें बिगाड़ता हूं, क्या तुम्हारा यही अभिप्राय है ?

मैली०—सचमुच मेरा यही आशय है।

सुक०—तब तो तुमने मुझे बहुत नीच माना है। अब यह कि क्या यही बात घोड़ों के विषय में भी यथार्थ है ? क्या एक ही मनुष्य उन्हें बिगाड़ता है और अन्य सब सुधारते हैं ? इसके विपरीत क्या एक ही मनुष्य जो अश्व रक्षक व शिक्षक है, उन्हें नहीं सुधारता और अन्य सब नहीं बिगाड़ते ! मैलीतस क्या यह बात घोड़ों व अन्य जीवों के विषय में युक्त नहीं है। यह बात तो सच है चाहे तुम और अनायतस उत्तर दो वान दो। नवयुवक बड़े ही भाग्यशाली हैं यदि एक यही मनुष्य उनके साथ बुराई तथा अन्य सब भलाई करते हैं। सचमुच मैलीतस ! तुम अपने शब्दों से यह प्रगट कर रहे हो कि तुमने इन बातों पर कभी विचार तक नहीं किया है। जिन बातों के लिये तुम मुझे दोषी ठहराते हो उनका तुम्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है, कृपया मुझेयह बताओ कि भले मनुष्यों में रहना अच्छा है। वा बुरों में। उत्तर दीजिये यह कोई कठिन प्रश्न नहीं है। क्या बुरे मनुष्य अपने पार्श्ववर्त्तियों को हानि और भले मनुष्य लाभ नहीं पहुंचाते हैं !

मैली०—है तो यही बात।

सुक०-तो क्या कोई ऐसा भी मनुष्य है जो नगरवालों से लाभ छोड़कर अपनी हानि कराना चाहे कृपया उत्तर दीजिये

क्योंकि उत्तर देने के लिये आप नियम बद्ध हैं क्या कोई अपनी हानि भी कराना चाहता है।

मैली०—कोई नहीं चाहता।

सुक०—तो क्या मैं नवयुवकों को जान बूझकर बिगाड़ता हूं या बिना जाने, जिसके लिये तुम मुझे दोषी बताते हो।

मैली०— तुम जान बूझ कर ऐसा करते हो ?

सुक०—मैलीतस ! तुम आयु में मुझसे बहुत छोटे हो। क्या तुम समझते हो कि तुम तो इतने बुद्धिमान हो सो यह जानते हो कि भले लोग भलाई और बुरे लोग बुराई करते हैं किन्तु मैं इतना मूर्ख हूं सो यह भी नहीं जानता कि यदि मैं नवयुवकों को बिगाडूंगा तो वह मेरे साथ बुराई करेंगे तुम इस बात का विश्वास न तो मुझे दिला सकते हो और न किसी अन्य व्यक्ति को कि मैं यह नहीं जानता हूं। अतएव या तो मैं नवयुवकों को किसी प्रकार नहीं बिगाड़ता और यदि बिगाड़ता हूं भी तो अपने अज्ञानवश, इस कारण तुम सब प्रकार से झूठे हो ! और जो मैं अज्ञानवश उन्हें बिगाड़ता हूं तो नियम तुम्हें आज्ञा नहीं देते ऐसे कार्य के लिये दोषी बताओ जिसे मैं जान बूझकर नहीं करता हूं क्योंकि ज्योंही मैं अपनी भूल देखूंगा त्योंही ऐसा करने से रुक-जाऊंगा, किन्तु तुमने मुझे न तो शिक्षा दी और न मेरी भूल बताई, यह सब छोड़कर भी तुम मुझे न्यायालयके बीच दोषी बता रहे हो जहां से नियम किसी अभियुक्त को शिक्षा प्राप्ति के लिये न भेज कर दण्ड पाने की आज्ञा देते हैं।

एथेन्स निवासियो ! सच पूछो तो मैलीतस ने इन बातों पर लेश मात्र भी ध्यान नहीं दिया है। तब भी, मैलीतस !

बताओ मैं किस प्रकार नवयुवकों को बिगाड़ता हूं। तुम्हारे लाये हुए अभियोग से तो यह प्रगट होता है कि मैं नवयुवकों को आदेश करता हूं कि नगर के देवों में से विश्वास हटाकर नवीन देवों की उपासना करो। क्या तुम्हारी समझ में मैं इसी प्रकार की शिक्षा से उन्हें बिगाड़ता हूं?

मैली०—वास्तव में तुम इसी शिक्षा से उन्हें बिगाड़ते हो।

सुक०—तोनहीं इदेवों के नाम पर कृपया मुझे व न्यायाधीशों को अपना आशय समझा दो क्योंकि मैं अभी तक तुम्हारा अभिप्राय नहीं समझ सका। क्या तुम यह कहते हो कि मैं नवयुवकों से कहता हूं कि नगर के देवताओं को छोड़ कर अन्य देवों की उपासना करो? क्या तुम मेरे प्रति इस कारण अभियोग चला रहे हो कि मैं नवीन देवों में विश्वास करता हूं? तुम मुझे पक्का नास्तिक समझते हो वा कुछ देवों का उपासक?

मैली०—मेरा आशय यह है कि तुम किसी को नहीं मानते।

सुक०—मैलीतस! यह तो और भी आश्चर्य की बात है। तुम यह बात क्यों कहते हो? क्या तुम यह जानते हो कि मैं अन्य लोगों की तरह सूर्यचन्द्र को देव नहीं समझता हूं?

मैली०-न्यायाधीशो! मैं शपथ द्वारा कहता हूं कि यह सूर्य को पत्थर और चन्द्र को दूसरी पृथ्वी समझता है।

सुक०—प्रिय मैलीतस! क्या तुम अनक्सागोरस के प्रति अभियोग चला रहे हो? मालूम होता है कि तुम न्यायाधीशों को तुच्छ व अशिक्षित समझते हो क्या उन्होंने नहीं देखा कि अनक्सागोरस ने ही यह अपने निजी विचार अपने

ग्रन्थों द्वारा प्रगट किये हैं। नवयुवक तो इन बातों को केवल चार २ पैसे की टिकट मोल लेकर उक्त लेखक के नाटकों में देखते हैं और यदि मैं भी उनको यही बातें अपनी निजी बताकर सिखाऊं तो वह शीघ्र ही मुझे झूठा समझकर मेरे में से विश्वास हटा लेंगे। कृपया सचमुच बतलाइये कि क्या सचमुच आप मुझे नास्तिक समझते हैं?

मेली०-जी हाँ, मैं आपको पक्का नास्तिक समझा हूं।

सुक०—मैलीतस! मुझे अन्य कोई भी नास्तिक नहीं समझता और मेरी समझ में तो स्यात् तुम भी जान बूझकर झूठ बोल रहे हो। एथेन्स नियासियो! मुझे मालूम होता है कि मैलीतस बड़ा आलसी और असभ्य है, वह अपने मन में सोचरहा है. 'क्या यह बुद्धिमान सुकरात समझ सकता है कि मैं उससे हंसी कर रहा हूं क्योंकि मैं एक स्थान पर कही हुई बात को दूसरे स्थान पर काटता हूं, अथवा क्या मैं सुकरात को चक्कर में डाल सकता हूं'?'। मेरी सभझ में मैलीतस अपनी ही कही हुई बात को काटता है वह ऐसा कहता हुआ मालूम होता कि सुकरात एक दुर्जन है जो कि देवों में विश्वास नहीं रखता किन्तु जो कि देवों में विश्वास रखता है। यह मूर्खता की बात है।

मित्रो! अब देखिये कि मैं उसका यह आशयकिस प्रकार निकाल रहा हूं। एथेन्स नियासियो। मुझे बीच में मत टोको क्योंकि मैं आप से आरम्भ में ही प्रार्थना कर चुका हूं कि यदि मैं अपनी स्वाभाविक बोलचाल का भी प्रयोग करूं तो आप लोग मुझे बोलने से न रोकें।

मैलीतस! तो क्या कोई ऐसा भी पुरुष है जो मनुष्य

सम्बन्धी वस्तुओं की उपस्थिति को तो मानता हो किन्तु मनुष्य जाति की उपस्थिति को न मानता हो ! मित्रो ! मूर्खता द्योतक टोक टाक न करके मैलीतस से मेरी बात का उत्तर निकालो। क्या कोई ऐसा भी मनुष्य है जो यह कहता हो कि घुड़सवारी तो होती है किन्तु घोड़ा कोई वस्तु नही होती वा या यह कहता हो कि बांसुरी बजाई तो जाती है परन्तु बजाने-वाला कोई नहीं होता है ? महाशय ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है, मैं इस बात से न्यायाधीशों व मैलीतस सबको ही संतुष्ट कर दूंगा परन्तु आप मेरे एक और प्रश्न का भी उत्तर दीजिये। क्या कोई ऐसा भी मनुष्य है जो यह कहता हो कि दैवी वस्तुयें तो होती हैं परन्तु देव नहीं होते हैं ?

मैली०—ऐसा कोई मनुष्य नहीं है।

सुक०—मैलीतस ! मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई कि लस्टम पस्टम करके न्यायाधीशों ने तुमसे उत्तर तो निकलवा लिया। तो तुम यह कहते हो कि मैं दैवी वस्तुओं में तो विश्वास रखता हूं (चाहे वह नवीन हों वा प्राचीन) और अन्य पुरुषों को भी ऐसा ही करने की सम्मति देता हूं। तो तुम्हारे लाये अभियोगानुसार मैं दैवी वस्तुओं में किसी न किसी रूप में विश्वास करता हूं। इस बात को तो तुमने अपने हस्त लिखित उपस्थित किये अभियोग में स्वीकार किया है परन्तु यदि मैं देव सम्बन्धी वस्तुओं ही में विश्वास करता हूं तो यह स्वयं सिद्ध है कि देवों में भी करता हूं। क्या यह बात ठीक नहीं है ? मैलीतस ! तुम उत्तर नहीं देते और मौन धारण किये हो इससे यह बात सिद्ध होती है कि तुम मेरी बात को स्वीकार करते हो। क्या हम लोग यह नहीं मानते कि देव सम्बन्धी

वस्तुएं अथवा लघुदेव या तो स्वयं देव ही हैं वा देवों के पुत्र हैं ? क्या तुम्हें यह स्वीकार है ?

मैली०—मुझे यह बात स्वीकार है।

सुक०—तो तुम इस बात को स्वीकार करते हो कि मैं लघु देवों में विश्वास करता हूं, यदि यह लघु देव स्वयं देवता हैं तब तो तुम मुझ से हंसी करते हो क्योंकि तुमने अभी कहा है कि मैं देवों की उपासना नहीं करता हूं और फिर यह कहते हो कि करता भी हूं। क्योंकि मैं लघु देवोंमें विश्वास रखता हूं। और यदि यह लघुदेव महादेवों के परी वा अन्य माताओं से उत्पन्न बालक हैं तो मैं यह पूछता हूं कि ऐसा कौन मनुष्य है जो कहता हो कि संसार में पुत्र तो होता है किन्तु पिता नहीं होता ? यह वही बात है जैसे कोई आदमी कहे कि गधे व घोड़े के बच्चे तो हैं किन्तु गधे व घोड़े नहीं हैं। स्यात्, मेरे ऊपर नास्तिकता का दोष इस लिये लगाया है कि या तो तुम मेरी चतुराई की परीक्षा करना चाहते हो वा तुम्हे मेरे में कोई दोष ही नहीं दिखाई दिया है किन्तु तुम किसी को यह विश्वास नहीं दे सकते कि पुत्र तो होते हैं परन्तु पिता नहीं होते।

एथेन्स निवासियो ! मै समझता हूं कि अब मुझे मैलीतस के लाये अभियोग के प्रति अपनी निर्दोषता सिद्ध करने के लिये अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मैं इतना अवश्य कहूंगा कि मैंने अपने वाद विवाद के कारण ही अनेक शत्रु खड़े कर लिये हैं और यदि मुझे मत्यु दण्ड मिला तो वह मैलीतस वा अनायतस के लाये अभियोग के कारण नहीं किन्तु उस द्वेष और भ्रम के ही कारण मिलेगा। इन दोनों

(द्वेष व भ्रम) ने पूर्व समय में भी अनेक देश हितैषियों के प्राण लिये हैं और आगे भी लेंगे मुझे कुछ भी पछतावा नहीं होगा यदि ये इस समय मेरे जीवन ग्राहक बनें।

स्यात् मुझ से कोई प्रश्न करेगा सुकरात क्या तुम्हें ऐसे कार्य करने में जिससे तुम्हारी मृत्यु होने की सम्भावना हो लाज नहीं आती? तो मैं शीघ्र ही सच्चे हृदय से उत्तर दूंगा, मित्र! यदि तुम्हारा यह विचार है कि किसी कार्य के करते समय मनुष्य के बुराई भलाई तथा अच्छे बुरे के अतिरिक्त अपने जीवन मृत्यु का भी ध्यान रखना चाहिये तो तुम्हारा विचार सदा निन्दनीय है और तुम भूल कर रहे हो तुम्हारे विचारानुसार तो एचिलीज़ के पुत्र थेटिस ने जो बुराई के सामने मृत्यु को स्वीकार किया था वह उचित नहीं था क्यों कि जब उसकी मातादेवी ने उसे समझाया था कि अपने मित्र की मृत्यु का बदला लेने के हेतु तू हेक्टर का प्राण घातक मत होवे क्योंकि ऐसा करने से तू मारा जायगा तो उसने माता के वचन सुनतो लिये परन्तु डरपोक बनकर जीवित रहना स्वीकार नहीं किया किन्तु स्पष्टतया कहा मैं तो पापी के शीघ्र ही प्राण लूंगा क्योंकि मैं संसार में लोगों के बीच हंसी कराकर और मित्र का बदला न लेकर जीवित रहना अच्छा नहीं समझता, तो क्या तुम सोच सकते हो कि उसने मृत्यु वा भय की कुछ भी चिन्ता की थी? जहां कहीं पर भी मनुष्य को नियत किया जावे तो बिना मृत्यु व भय की चिन्ता किये उसे वहीं डटा रहना सराहनीय है।

एथेन्स निवासियो! एम्फीपोलीज़ व डेलियन की लड़ाइयों में जहां कहीं पर भी मेरे सेनाधिकारियों ने मुझे नियत

किया था मैं मृत्यु की कुछ भी चिन्ता न करके मनुष्यों की तरह वहीं अड़ा रहा, और यदि मैं मृत्यु वा अन्य भय के कारण अपना स्थान छोड़ देता तो मेरे लिये लज्जा की बात होती क्योंकि ईश्वर ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं अपना जीवन ज्ञान प्राप्ति व आत्मपरीक्षा में व्यतीत करूं। यदि उस समय मैं अपना स्थान छोड़ देता तो अवश्य ही मेरे ऊपर अभियोग चलाया जा सकता था कि मैंने ईश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया अतः नास्तिकता प्रगट की। यदि मैं मृत्यु से डर जाता तो देवोत्तर का पालन न करता क्योंकि मृत्यु से डर जाना अपने को बुद्धिमान समझना है क्योंकि इससे सिद्ध होता है कि हम मृत्यु की प्रकृति जानते हुए अपने को प्रगट कर रहे हैं जब कि वास्तव में हमें यह ज्ञान नहीं है कि मृत्यु क्या है? सम्भव है कि मृत्यु ही मनुष्य के लिये सर्वश्रेष्ठ वस्तु होवे परन्तु मनुष्य मृत्यु से इस प्रकार डरते हैं जैसे कि वह कोई अत्यन्त बुरी वस्तु है। और यह क्या बात है? केवल जिस बात का हमें कुछ भी ज्ञान नहीं उसमें अपने को पूर्ण ज्ञानी समझना है।

मित्रो! इस विषय में भी मैं सर्वसाधारण से भिन्न हूं और यदि मैं लोगों से अधिक बुद्धिमान होने की डींग भरता हूं तो वह इसी कारण कि मैं यह कहकर कि मुझे दूसरी दुनियाँ का ज्ञान है, अपने को झूंठा ज्ञानी नहीं बनाता। परन्तु मैं बड़ों की आज्ञा का पालन न करना, चाहे वह मनुष्य हो वा देवता, बहुत बुरा समझता हूं। मैं कभी किसी बुरे कार्य्य को करने के लिये उद्यत नहीं हूं और न किसी ऐसे काम के करने से जिसका भला होना सम्भव दिखाई देता है हिच किचाता

हूं। अनायतस कहता है कि यदि अब सुकरात को मुक्त करदिया गया तो वह नवयुवकों को बिगाड़ना आरम्भ कर देगा। यदि आप उसकी इस बात ध्यान न देकर मुझ से कहें कि 'सुकरात! इस समय तो हम तुमको इस शर्त पर छोड़े देते हैं कि तुम अभी से अपने तर्क को तिलाञ्जलि देदो और यदि तुम फिर भी ऐसा करते हुए पाये जाओगे तो हम तुम्हें प्राण दण्ड देंगे'। यदि आप इस शर्त पर मुझे मुक्त करदें तो मैं यही कहूंगा कि 'श्रीमानों की आज्ञा शिरोधार्य है परन्तु मैं आपकी आज्ञा को इतना आवश्यक नहीं समझता जितना कि ईश्वरीय आज्ञा का पालन, और जबतक मेरे शरीर में सामर्थ्य और श्वास हैं तब तक मैं आपलोगों को शिक्षा देने से कदापि मुंह न मोड़ूंगा। और जिस किसी से मिलूंगा उसी को सत्य प्रगट करूंगा और कहूंगा कि माननीय महाशय! आप एथेन्स के रहनेवाले हैं जो कि ज्ञान में बड़ा विख्यात और प्रशंसित नगर है, क्या आपको लाज भी नहीं आती कि आप ज्ञान व बुद्धि के सामने प्रशंसा, धन और नाम की अधिक चिन्ता करते हैं? क्या आप आत्म शिक्षा की ओर ध्यान न देंगे! यदि वह उत्तर देगा कि 'मैं ध्यान देता हूं' तो मैं उसे यह सुन कर छोड़ न दूंगा किन्तु उसकी परीक्षा करूंगा और उसे भला न पाकर ऊंची नीची सुनाऊंगा कि तुम बहु मूल्य वस्तुओं का कुछ भी ध्यान न रखकर निरर्थक बातों की चिन्ता किया करते हो। जो कोई भी मुझे मिलेगा, वृद्ध हो अथवा बालक, उसी के साथ में ऐसा व्यवहार करूंगा परन्तु अधिकतर नगर वासियों के साथ क्योंकि उनसे मेरा घनिष्ट सम्बन्ध है और ईश्वर ने ऐसा करने की मुझे आज्ञा दी है। एथेन्स निवा-

सियो! ईश्वर की ओर से मेरी सेवा से बढ़कर तुम्हें इस नगर में अधिक मूल्यवान कोई वस्तु नहीं प्राप्त है क्योंकि मैं अपना सारा जीवन इधर उधर जाने में व्यतीत करता हूं और लोगों से कहता फिरता हूं कि तुम सब से पहिले आत्मिक शिक्षा की चिन्ता करो तत्पश्चात् धन, दौलत और अन्य सांसारिक वस्तुओं की, क्योंकि धन दौलत से नेकी नहीं प्राप्त होती परन्तु नेकी से धन, दौलत और प्रायः सब ही मूल्यवान वस्तुएं जो मनुष्य को प्राप्त हैं, मिल सकती हैं। यदि मैं इसी प्रकार की शिक्षा से युवकों को बिगाड़ता हूं तब तो तुम्हारी बड़ी भूल है और यदि कोई व्यक्ति कुछ और ही बतलाता है। तो निश्चय जानो कि वह असत्य भाषण करता है अतएव एथेन्स निवासियो! अनायतस की बात सुनो अथवा न सुनो मुझे मुक्त करो अथवा न करो किन्तु विश्वास रक्खो कि मैं अपने जीवन का उद्देश नहीं पलटूंगा उसके लिये मुझे एकबार नहीं भले ही सैकड़ों बार सूली पर चढ़ना पड़े !!!

एथेन्स निवासियो! मेरी पूर्व प्रार्थना का विचार करके बीच में टोक टाक मत करो क्योंकि आपको मेरी बातें सुनने से लाभ होगा। मैं आप से एक और बात कहता हूं जिसे सुनकर स्यात् आप हल्ला मचावेंगे किन्तु ऐसा न करना विश्वास रक्खो कि यदि तुम मुझ जैसे को प्राण दण्ड दोगे तो अपने लिये कण्टक बोओगे। मैलीतस व अनायतस मुझे कोई हानि नहीं पहुंचा सकते क्योंकि ईश्वर की ओर से मुझे आशा है कि भले मनुष्य को कोई पापी हानि नहीं पहुंचा सकता अब मेरी मृत्यु हो वा देश निकाला अथवा मेरे अधिकार छिन जावें इन बातो को मैलीतस भारी सम

झता होगा परन्तु मैं ऐसा नहीं समझता किन्तु याद रक्खो कि वह एक निरपराधी की जान लेकर पाप कर रहे हैं। एथेन्स निवासियों अब मैं अपनी निरपराधता सिद्ध करने के लिये एक भी शब्द नही कह रहा हूं मैं तो केवल आप से प्रार्थना कर रहा हूं कि ईश्वर के दिये हुये पुरस्कार को पृथक करके परम पिता के प्रति पाप मत करो। यदि तुम मुझे मृत्यु दण्ड दे दोगे तो स्मरण रक्खो कि मेरा स्थान भरने के लिये तुम्हें कोई दूसरा योग्य पुरुष नहीं मिलेगा ईश्वर ने मुझे इस नगर पर आक्रमण करने के लिये भेजा है, जैसे टुरकी मक्खी सुस्त घोड़े की नासिका में घुसकर डंक मारती है जिससे घोड़ा निद्रा त्यागकर भागने लगता है उसी प्रकार मैं भी आप सोते हुओं के बीच तर्क रूपी डंक मारता हूं जिससे आप लोग चैतन्य हो जाते हैं। मैं सदा आपसे प्रार्थना करता रहता हूं। व समयानुसार भला बुरा भी कहता हूं। आपको मेरा स्थान भरने के लिये कोई योग्य पुरुष न मिलेगा और यदि आप मेरी शिक्षा मान लेंगे तो मेरा जीवन बच जावेगा। यदि आप अनायतस की बात स्वीकृत कर लेंगे तो मेरा एक ही हाथ में काम तमाम कर देंगे और फिर बहुत समय तक बिना जगाये पड़े रहेंगे जब तक कि आपके जगाने के लिये परमात्मा पुनः कृपा करके कोई दूसरा योग्य पुरुष न भेजेंगे। इस बातको आप सुगमता से समझ सकते हैं कि ईश्वर ने ही मुझे इस नगर में भेजा है क्योंकि सोचिये तो सही मैं कभी भी किसी मनुष्य के आदेश से अपना लाभ त्याग कर मारा २ लोगों के पास यह कहता हुआ न फिरता कि आप धन दौलत के सामने भलाई की अधिक प्रतिष्ठा करें जिस प्रकार कि कोई

पिता वा बड़ा भाई शिक्षा देता है। इन कामों के करने से न तो मुझे कोई निजी लाभ होता है और न धन की प्राप्ति ही होती है क्योंकि आप स्वयं देखते हैं कि मेरे विरोधियों ने और तो बहुत दोषारोपण किये हैं किन्तु उन्होंने मेरे ऊपर धन लेने का दोष नहीं लगाया है क्योंकि इसके लिये वे कोई साक्षी नहीं ला सकते थे मेरी निर्धनता भी मेरी ही बात की पुष्टि कर रही है।

स्यात् आपको यह बात आश्चर्य जनक मालूम होगी कि मैं निजी तौर पर तो लोगों को शिक्षा देता हूं परन्तु यहां महा सभा में आकर भाग नहीं लेता जहां पर मैं अपने भाव सहस्त्रों मनुष्यों पर प्रकट कर सकता हूं इसका कारण कहते हुये आपने मुझे सुनाही होगा वह ईश्वर का दिया हुआ एक दैवी भाव है जिसका वर्णन मैलीतस ने भी अपने अभियोग में किया है। यह मेरे साथ बाल्यावस्था से ही है यह मुझे बुरा कार्य करने से तो रोक देता है परंतु किसी कार्य करने में सहायक नहीं होता है यही भाव मुझे सार्वजनिक सभाओं में भाग लेने से रोकता है क्योंकि, एथेन्स निवासियो! यह स्पष्ट है कि यदि मैंने राजनीति में भाग लेने की चेष्टा की होती तो अवश्य ही मैं अपने प्राण कभी का खो बैठता। मैं सत्य बोल रहा हूं अतएव मेरे ऊपर क्रोधित न हूजिये। एथेन्स निवासियो! किसी भी स्थान में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो सब लोगों का व राजनीति का विरोध करता हुआ अधिक समय तक अपने प्राण बचा सके। इसलिये जो कोई भी न्याय के लिये लड़ना चाहे तो उसे यह कार्य निजी तौर पर करना उचित है यदि वह संसार में एक पल के लिये भी बेखटके जीने की इच्छा करे।

मैं इस बातको शब्दों द्वारा नहीं किन्तु कार्यों से सिद्ध कर सकता हूं। अब सुनिये कि कोई भी मनुष्य मुझे मृत्यु वा अन्य भय की धमकी देकर किसी भी बुरे काम करने के लिये बाधित नहीं कर सकता चाहे वह कैसा ही उद्योग क्यों न करे! मेरी यह बात न्यायालय में कोरी झूठी कहावत सी ही न समझी जावे किन्तु यह अक्षरशः सत्य है। मैंने यदि कभी महासभा में कोई पद प्राप्त किया था तो वह एक समय सरपंच का था जब आप लोगों ने अर्गानूसी की लड़ाईवाले आठों सेनापतिओं के प्रति एक ही साथ दण्ड आज्ञा देने की इच्छा थी उस समय मैं ही मुखिया था उस समय प्रधानों में से मैं ही अकेला था जिसने आपकी सम्मति के विरुद्ध न्याय पूर्ण तथा नियमानुकूल सम्मिति प्रगट की थी। वक्तागण तथा श्रोतागण मेरे मृत्यु देने व देश निकाले की धमकी देकर चिल्लाने लगे थे परन्तु मैंने यही उचित समझा था कि कारागार व मृत्यु की चिन्ता न करके मुझे तो न्यायानुसार सम्मति देना चाहिये। यह तो प्रजा तंत्र राज्य के समय की बात रही अब धन पतिओं के राज्य की भी सुनिये। जब उनका आधिपत्य आया तो तीस प्रधानों ने मुझे व चार अन्य पुरुषों को सभा में बुलाया और सेलेमिस स्थान से लीवन नामी पुरुष को पकड़ लाने की आज्ञा दी जिसका पालन न करने पर मृत्यु दण्ड नियत किया गया था। वह लोग इस प्रकार की कठिन आज्ञाएं अपने पापों में अधिक मनुष्यों को सम्मिलित करने की इच्छा से देते थे। परन्तु उस समय भी मैंने शब्दों से नहीं कार्यों से दिखला दिया कि मृत्यु को मैं तिनके के समान भीनहीं समझता और ईश्वरीय नियम मुझको सदा प्रिय और शिरोधार्य हैं।

यह राज सभा मुझे भय भीत कर बुराई कराने में सफल न हो सकी शीघ्र ही वह राज्य नष्ट होगया यदि वह कुछ दिवस और भी स्थिर रहता तो मैं अवश्य ही कालका कवर बनता इस बात के तो आप सब लोग ही साक्षी हैं।

क्या आप अब भी मानते हैं कि यदि मैंने सार्वजनिक सभाओं में भाग लिया होता तो अब तक जीवित रह सकता था? मैं ही क्या कोई भी ऐसा पुरुष जीवित नहीं रह सकता था। आप स्वयं मेरे सार्वजनिक व निजी जीवन पर दृष्टि डालकर देख सकते हैं कि मैंने कभी किसी मनुष्य के लिये यहां तक कि अपने शिष्यों के लिये भी न्याय त्याग कर सम्मति नहीं दी मैंने कभी किसी भी वृद्ध वा बालक से बातचीत करने के लिये निषेध नहीं किया और न किसी से द्रव्य ही स्वीकार किया चाहे कोई मनुष्य धनवान हो वा निर्धन यदि उसकी इच्छा हो तो चाहे जितने समय तक बातचीत कर सकता है। न्यायानुसार मेरे ऊपर किसी भी मनुष्य के बिगाड़ने वा सुधारने का दोषारोपण नहीं किया जा सकता क्योंकि न तो मैंने कभी किसी को विद्या पढ़ाई और न पढ़ाने की चेष्टा की! यदि कोई मनुष्य कहे कि उसने मुझसे विद्या पढ़ी है तो समझलो कि वह झूठ बोलता है. अब प्रश्न यह है कि लोग मेरी संगति को क्यों चाहते हैं? क्या आपने कभी इसका कारण सुना है? मैंने आपसे सत्य बात जो थी वह कहदी कि उन्हें मेरी तर्क सहित बोल चाल अच्छी मालूम होती है। सचमुच उसे सुनना बड़ा चित्ताकर्षक मालूम पड़ता है। मेरा विश्वास है कि ईश्वर ने मुझे स्वप्न, बोलचाल, देवोत्तर प्रायः सभी बातों में लोगों की परीक्षा करने की आज्ञा दी है। यह बात

सत्य है, यदि सत्य न होती और मैंने युवकों को बिगाड़ा होता तो आज वही लोग बड़े होने पर मेरे प्रति अभियोग चलाते अथवा बदला लेने का उद्योग करते। और यदि वे लोग ऐसा करने से हिचकते तो उनके माता पिता व सम्बन्धी मेरी की हुई बुराई को याद करके बदला अवश्य ही लेते। उनमें से यहां बहुत से उपस्थित हैं, मेरे प्रान्त का किराती, किराती बूलस, लिसीनियास इत्यादि बहुत से हैं जिन के मैं नाम गिना सकता हूं, मैलीतस उनको साक्षी भी बना सकता था यदि मैं वास्तव में ही दोषी होता। यदि वह ऐसा करना भूल भी गया था तो मैं एक ओर खड़ा हुआ जाता हूं और वह चाहे जिसको यहां उपस्थित करे यदि उसे कोई मिल सके तो। परन्तु बात तो कुछ और ही है, मैलीतस व अनायतस तो मुझे नवयुवकों का बिगाड़नेवाला कह रहे हैं किन्तु युवक लोग उलटे मेरी सहायता करने को उद्यत हैं। यदि शीघ्र बिगड़े हुओं को मेरे सहायक होना मान भी लिया जावे तो उनके सम्बन्धी मेरे ऊपर दोष लगा सकते हैं। कारण तो यह है कि मैं समूल निरपराधी हूं।

जो कुछ मैंने अपने पक्ष में कहा वह बहुत कुछ है। स्यात् आप में से कोई सोच रहा होगा कि यदि उसके ऊपर इससे भी कम दोष लगाया गया होता तो उसने अपने बाल बच्चे न्यायालय में लाकर रोना पीटना आरम्भ करके मृत्यु दण्ड को हटाने की आप से प्रार्थना की होती। अगर कोई ऐसा सोच रहा है तो स्यात् वह मुझे कठोर हृदय समझकर क्रोध में आकर अपनी सम्मति मेरे प्रतिकूल दे। यदि कोई ऐसा विचार कर रहा है तो मैं बीरता से यही उत्तर देता हूं कि

मेरी स्त्री है, और तीन पुत्र हैं जिन में एक तो अभी अजान ही है' तब भी मैं उन्हें यहां लाकर न्यायाधीशों से कृपा कराने की प्रार्थना न करूंगा। भूल से अथवा जान बूझकर लोग मुझे सर्व साधारण के प्रतिकूल समझ रहे हैं, उन लोगों के लिये जो वीरता और बुद्धिमानी में विख्यात हैं यह विचार करना बड़ी लज्जादायक बात होगी। मैंने बहुत से प्रशंसित पुरुषों को देखा है कि वे अपने मृत्यु दण्ड दिये जाने के समय, मृत्यु से भय खाते हैं और अपने को अमर समझते हैं यह एक आश्चर्य की बात है। मेरी समझ में ऐसे लोग नगर के ऊ पर कलंक लगाते हैं क्योंकि यदि कोई विदेशी आवे तो यही विचार करेगा कि यहां के कर्मचारी जो सर्व-साधारण में से चुने जाते हैं स्त्रियों से किसी प्रकार उच्च नही हैं! एथेन्स निवासियो! न तो तुम में से यह काम किसी को स्वयं करना चाहिये और न दूसरे को करने देना चाहिये तुमको घोषण करा देनी चाहिये कि जो लोग ऐसा करके नगर की हंसी कराते हैं वह दण्डनीय हैं और किसी प्रकार कृपा पात्र नहीं हैं।

प्रतिष्ठा के प्रश्न को छोड़कर भी मित्रो! मैं रो पीटकर न्यायाधीशों से मुक्त होने की प्रार्थना करना उचित नहीं समझता, मेरा तो कर्त्तव्य यह है कि तर्क द्वारा उसको निरपराधता सिद्ध करूं क्योंकि न्यायाधीश तो न्याय करने के लिये हैं न कि अपने मित्रों पर कृपा करने के लिये, उसने इस बात की शपथ भी देदी है कि वह कभी अनुचित कृपा न दिखाकर सदा न्यायानुसार कार्य सञ्चालन करेगा। इसलिये न तो हमें आप लोगों को अपनी शपथ तोड़ने के लिये आग्रह करना

चाहिये और न आप लोगों को हमें ऐसा करने देना चाहिये क्योंकि इनमें से कोई भी बात उचित नहीं है। अतएव आप लोग मुझको ऐसा कार्य करने के लिये न कहें क्योंकि मैं इन बातों को अपवित्र समझता हूं, विशेष कर आज तो आप किसी प्रकार न कहें क्योंकि मैलीतस तो मुझे अपवित्रता करने ही के कारण दोषी ठहरा रहा है। यदि मैं ऐसा करने पर आप का कृपापात्र बन भी गया तो भी देवताओं का तिरस्कार करूंगा क्योंकि आपने देवताओं के सन्मुख जो शपथ दी है उसी को तोड़ने के लिये मैं आपको बाधित कर रहा हूं। इससे तो यह सिद्ध होजा- यगा कि मैं देवों की उपासना नहीं करता और मैलीतस ने यही दोष मेरे ऊपर लगाया है। परन्तु मैं तो देवों में विश्वास रखता और उनकी उपासना करता हूं, और मेरे विरोधी उनमें श्रद्धा नहीं रखते। अतएव मैं ईश्वर के नाम पर न्याय को आपके उपर छोड़ता हूं जिससे आपका भी और मेरा भी कल्याण हो।

(इतने पर सभासदों की सम्मति ली गई और सुकरात २२० के विपरीत २८१ सम्मतियों से दोषी ठहराया गया)

सुकरात—एथेन्स निवासियो ! आपने जो आज्ञा दी है मैं उससे कई कारणों से दुखित नहीं हुआ हूं। यह तो मुझे पहिले ही से आशा थी कि मैं दोषी ठहाराया जाऊंगा किन्तु सम्मतियों की संख्या देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है। मैं यह नहीं समझता था कि मेरे विपरीत इतनी थोड़ी सम्मतियां होंगी किन्तु अब मैं देखता हूं कि यदि केवल तीस ही मनुष्यों ने मेरे पक्ष में अधिक सम्मति दी होती तो

मैं मुक्त होजाता। अब मुझे यह प्रतीत होता है कि मैंने मैलीतस को बचा दिया क्योंकि यदि अनायतस और लायकन दोष लगाने के लिये आगे न बढ़ते तो मैलीतस सम्मतियों का पञ्च भाग अपने पक्ष में न कर पाता अतएव देश के नियमानुसार उसे एक सहस्त्र ड्रेकमा (एक सिक्का) दण्ड के देने होते और उसके अधिकार व सम्पत्ति छिन जाती।

तो अब वह मेरे लिये मृत्यु दण्ड तजवीज़ कर रहा है, करने दो। अब मैं नियमानुसार कौन सा दण्ड अपनी ओर तजवीज़ करूं? मैं लोगों के हितार्थ अपना जीवन व्यतीत करने के बदले किस बात का भागी हूं? मैंने अपने जीवन में सारे सांसारिक सुख, धन दौलत, सार्वजनिक सभाएं, वक्तृताएं और अधिकार छोड़ दिये थे क्योंकि मैं जानता था कि इनमें भाग लेने से मेरे प्राण हते जावेंगे। इस कारण मैं उन स्थानों पर नहीं गया जहां कि मैं किसी के भी साथ भलाई नहीं कर सकता था। इसके विपरीत मैं आप लोगों में यह कहते घूमा कि आप पहिले अपनी आत्मा को पहिचानें और सुधारें तत्पश्चात् सांसारिक बातों की ओर ध्यान दें। तो ऐसा जीवन व्यतीत करने के बदले में किस बात के योग्य हूं? एथेन्स नियासियो! यदि न्यायानुसार कहा जावे तो मैं किसी अच्छी बात के योग्य हूं। सर्व साधारण का हित चिन्तक जो सदैव भलाई करने में समय व्यतीय करता है, किस बात के योग्य है? उसके लिये सर्वसाधारण के सार्वजनिक भवन *

* एथेन्स में यह एक भवन था जहां पर वे लोग जो कि अपना जीवन देशहित में व्यतीत करते थे, सर्वसाधारण के व्यय पर बुढ़ोती में सुख भोगने के लिये रक्खे जातेथे। वास्तविक चरितनायक के लिये यही स्थानयोग्य था।

(Public maintenance in the Prytaneum) में पालन के अतिरिक्त कौनसा अच्छा पुरस्कार हो सकता है ? यह पुरस्कार किसी अन्य प्रतिष्ठा प्राप्त वीर पुरुष के लिये अधिक योग्य है क्योंकि अन्य लोग तो आपको वाह्य प्रसन्नता पहुंचाने का उद्योग करते हैं। परन्तु मैं आपको सच्ची आन्तरिक प्रसन्नता पहुंचाने का उद्योग करता था। अतः मैं अपनी ओर से अपने लिये यही बात तजवीज़ करता हूं।

रोने पीटने और प्रार्थनाएं करने के विषय में जो मैंने अपने विचार प्रगट किये हैं, स्यात् आप उनको सुनकर मुझे हठी वा घमण्डी समझते हों। किन्तु इसका कारण यही है कि मैंने कभी किसी के साथ बुराई नहीं की है, यद्यपि मैं केवल थोड़ा ही समय मिलने के कारण आपको यह बात सिद्ध नहीं कर सका हूं। यदि और स्थानों की तरह एथेन्स में भी यही नियम होता कि मृत्यु जीवन का प्रश्न एक दिन में तय न किया जावे तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं आपको अपनी बात का विश्वास दिला देता, परन्तु इस थोड़े से समय में शत्रुओं के झूठे अभियोगों के प्रति निरपराधी सिद्ध करना कठिन है। जब मुझे अपनी पवित्रता का पूर्ण विश्वास है तो मुझे अपने लिये बुरी बात क्यों तजवीज़ करनी चाहिये? इससे तो यही बात अच्छी है कि एक सरासर बुरी वस्तु को त्यागकर मैलीतस की तजवीज़ की हुई वस्तु (मृत्यु) से भेंट करूं क्योंकि उसका तो बुरा होना निश्चय ही नहीं है। क्या मैं इसके बदले में कोई ऐसी बात तजवीज़ करूं जिसे मैं स्वयं ही बुरा समझता हूं? मैं कारागार में अधिकारियों का गुलाम

रहकर जीवन क्यों व्यतीत करूं ? मैं आप से पहिले ही कह चुका हूं कि धनाभाव के कारण मैं द्रव्य दण्ड नहीं दे सकता तो क्या मैं देश निकाला तजवीज़ करूं ? जब आपही मेरे नगर-वासी होकर मेरा वाद विवाद सहन न कर उससे छुटकारा पाने का उद्योग कर कर रहे हैं तो मुझे कब आशा होसकती है कि अन्य देश के लोग जहां जाने की आप मुझे आज्ञा दें, सहर्ष सहन करेंगे। क्या मैं इस वृद्धावस्था में एथेन्स को छोड़कर मारा २ इधर उधर फिरूं क्योंकि जहां कहीं मैं जाऊंगा युवक अवश्यही मेरी बातें सुनने की इच्छा प्रगट करेंगे, यदि मैं उनसे नाहीं करूंगा तो वे अपने वृद्धों से कहकर मुझे वहां से भी निकलवा देंगे, और यदि मैं सुनाऊंगा तो उनके माता, पिता तथा सम्बन्धी यहां वालों की तरह मुझे निकाल देंगे।

स्यात् कोई कहेंगे 'सुकरात तुम एथेन्स से निकल कर मौन क्यों नहीं साधलेते'। यह मैं नहीं कर सकता क्योंकि ऐसा करने से ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन होगा स्यात् आप इस बात में विश्वास न करेंगे। यदि मैं कहूं कि भलाई के विषय में दिन रात बातें करने के अतिरिक्त कोई ऐसी अच्छी वस्तु नही हैं जिसे मनुष्य प्राप्त कर सके और ऐसा न करने से मनुष्य जीवन, जीवन ही नहीं कहा जासकता, तो आपको किञ्चित मात्र भी विश्वास नहीं होगा। किन्तु मित्रो ! सत्य तो यही है और इसके अतिरिक्त मैं दण्डनीय नहीं हूं। यदि मैं धनवान होता तो विना हानि सहे रुपया दे कर मुक्त हो जाता परन्तु यह बात है नहीं क्योंकि मैं निर्धन हूं, आप बहुत अल्प धन मांगें तब काम चले क्योंकि मैं एक ड्रेकमा (जो ६०

रुपये के बराबर था) ही दे सकता हूं । एथेन्स निवासियो ! ये प्लेटो और क्रिराता तीस ड्रेक्मा की कह कर स्वयं जमानत बनते हैं।

(यह सुनकर न्यायाधीशों ने उसे मृत्यु दण्ड की आज्ञा दी)

सुकरात--एथेन्स निवासियो ! मैं सत्तर वर्ष की आयु का हूं इस से कुछ दिन पश्चात् स्वयं ही मर जाता, आपने मृत्यु दण्ड दे कर अधिक समय का लाभ नहीं कर लिया, एक निरपराधी को मृत्यु दण्ड देने के कारण नगर हितचिन्तक तुम्हें बहुत तंग करेंगे। क्योंकि वे लोग आप को गालियां देते समय मुझको अवश्य ही बुद्धिमान कहेंगे चाहे मैं ऐसा होऊं वा नहीं। मित्रो ! आप विचार करते होंगे कि मैंने संतोषजनक वाद विवाद नहीं किया जिससे मैं अपनी पवित्रता सिद्ध कर के बच जाता। परन्तु यह बात नहीं है मैंने निर्लज्जता और ढीठता में न्यूनता दिखाई थी इसी कारण दण्डनीय ठहराया गया क्योंकि यदि मैं आपके सन्मुख रोता, पीटता और पछतावा करता हुआ आता तो मुक्त हो जाता। मैंने अपने वाद विवाद के बीच सोचा कि कोई ऐसा काम न करूं जो मानव जाति को लज्जा लानेवाला है। रोने पीटने से मुक्त होने के सामने मैं मृत्यु को अच्छा समझता हूं । नियमानुसार मुकदमे में और युद्ध में कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें मनुष्य मृत्यु से बचने की इच्छा से नहीं कर सकता। लड़ाई में ऐसे समय प्राप्त होते हैं जब एक योद्धा अपने शस्त्र छोड़ घुटनों के बल गिर कर शत्रु से प्राण दान मांगे और प्रायः संकट के सभी समयों में यदि मनुष्य नीच से नीच कार्य करने पर उतारू हो जावे तो अपनी जान बचा सकता है। परन्तु मित्रो ! मेरी समझ

में तो मृत्यु से बचना इतना कठिन नहीं है जितना कि दुष्टता से क्योंकि यह मनुष्य को अधिक शीघ्रता से पकड़ती है। अब मैं तो बूढ़ा हो गया सो मृत्यु के चक्कर में हूं किन्तु विरोधी वायुगति से दौड़नेवाली दुष्टता के आधीन हैं। अब मैं तो आप से दण्ड पाकर मृत्यु पानेके लिये जाऊंगा किन्तुयह लोग अपनी दुष्टता और बुराई के बदले ईश्वरीय दण्ड पाने के लिये जावेंगे मैं भी अपने दण्ड को भोगूंगा और यह लोग भी। ईश्वर को ऐसा ही करना था परन्तु मेरी समझ में तो न्यायाधीशों ने अन्याय किया है।

जिन लोगों ने मुझे दण्ड दिया है उनको मैं भविष्यतवाणी कहूंगा क्योंकि मैं मरने के लिये जा रहा हूं और यह ऐसा समय है कि जब बहुधा लोगों में भविष्यतवाणी करने की शक्ति आ जाती है। अब मैं अपने दण्ड देनेवालों को भविष्यतवाणी कहता हूं कि आप लोगों ने जो मुझे दण्ड दिया है उससे भी कठिन आपत्ति आप लोगों को मेरी मृत्यु के पश्चात् घेरेगी। आपने यह काम इस बात को सोचकर किया है कि मेरे मरजाने पर आप लोग अपने जीवन का हिसाब देने से मुक्त होंगे किन्तु परिणाम विपरीत ही होगा मुझसे शिक्षा प्राप्त बहुत से लोग उठ खड़े होंगे जो आप लोगों से जीवन सम्बन्धी वाद विवाद करेंगे। वे नवयुवक हैं सो आप उन पर अधिक क्रुद्ध होंगे इस कारण वे आप लोगों के ऊपर बहुत ढीठता दिखावेंगे। यदि आप यह सोचते हैं कि लोगों को मृत्यु दण्ड देकर आप बुरा भला सुनने से बच जावेंगे तो आप बड़ी भूल कर रहे हैं बचने का यह मार्ग असम्भव है और निन्दनीय है। इस बुरे भले कहने को धमकियों से

बन्द कर देना ठीक नहीं किन्तु आत्मसुधार करना ही उचित है। मेरे विरोधियों व दण्डदेनेवालों के प्रति यही मेरी भविष्यतवाणी है।

मृत्यु स्थान को जाने के पूर्व मैं अपने पक्षपातियों से, जब तक राजकर्मचारी अपने कार्य में निमग्न हैं, मृत्यु के विषय में बात चीत करूंगा। मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता जो हमें बात चीत करने से रोके। अतः यहां से जाने के समय तक हम आपस में बात चीत करलें। अब मैं आपको यह समझा देना चाहता हूं कि मेरे ऊपर क्या आया है। मैं आपको सच्चे न्यायकारी कह कर पुकारूं तो अनुचित न होगा अब सुनिये कि मेरे ऊपर क्या आया है! मेरे साथ एक ईश्वरीय भाव रहता है जो सदा बुरे काम करने में मुझे टोक देता है। आज जब से मैं घर से चला हूं तब से न तो मार्ग में, न न्यायालय में और न अब उस भाव ने मुझे किसी कार्य के करने या किसी बात के कहने से रोका है, इस कारण मैं कहता हूं कि जो वस्तु मुझको होने वाली है वह भली ही है, जो लोग उसे बुरा कहते हैं वह बड़ी भारी भूल करते हैं क्योंकि यदि वह बुरी होती तो उस ईश्वरीय भाव ने मुझे रोक दिया होता

यदि हम एक दूसरी तरह से देखें तब भी जान सकते हैं कि मृत्यु एक अच्छी वस्तु है क्योंकि मृत्यु दो बातों में से एक हो सकती है (१) या तो मृत्यु प्राप्त मनुष्य सुषुप्ति की दशा में हो कर जन्म लेने से बरी हो जाता है या (२) सार्वजनिक विचार के अनुसार जीव दूसरे स्थान में जाकर नूतन शरीर धारण कर लेता है। यदि मृत्यु सुषुक्ति की दशा है जिसमें मनुष्य बिना स्वप्न देखे गहरी नींद सोता है तब तो यह बड़ी

ही विलक्षण वस्तु है। क्योंकि यदि किसी मनुष्य से पूछा जावे कि वर्ष के भीतर तुम कितनी रात्रियों में विना स्वप्न देखे गहरी नींद सोये हो तो मेरे विचार से साधारण मनुष्य क्या एक बादशाह भी सुगमता से गिनकर बता सकता है। यदि मृत्यु की प्रकृति ऐसी ही है तो मैं उसे एक लाभ समझता हूं क्योंकि उस समय अनादि भी एक रात्रि के समान हो जाती है।

यदि सार्वजनिक विचारानुसार मृत्यु केवल दूसरी संसार की यात्रा है तब न्यायाधिकारियो! इससे बढ़कर अच्छी और क्या वस्तु हो सकती है? क्या एक ऐसी यात्रा जिसकी समाप्ति में जीव दूसरे लोक में पहुंचता है जहाँ सच्चे न्यायाधीश न्याय करने बैठते हैं और यहां के से द्वेषी दिखाई भी नहीं देते, पूर्ण करने के योग्य नहीं है? क्या आप लोग वहां के रहनेवाले सच्चे देवों से बातचीत करना नहीं चाहते? यदि यह बात सच है तो मैं एक बार नहीं कई बार मरने के लिये तयार हूं। वहां पर बड़े २ देवों से भेंट होना मैं तो एक प्रसन्नता समझता हूं। वहां पर मैं यहां की तरह परीक्षा कर सकूंगा कि कौन सच्चा ज्ञानी है और कौन झूंठा अपने को ज्ञानी बतलाता है? उनके सम्भाषण, उनकी परीक्षा और संगति बड़ी ही लाभदायक होगा, वहां के निवासी वादविवाद के लिये मनुष्य को मृत्यु दण्ड नहीं देते हैं। वर्त्तमान सिद्धान्त के अनुसार वहां के जीव प्रसन्न होने के अतिरिक्त अमर भी हैं।

आप लोगों को भी यह समझ कर कि भले मनुष्य पर कोई बुराई नहीं आ सकती, मृत्यु का सामना साहस पूर्वक

करना चाहिये। देवगण भले मनुष्य के गुणों को भूल नहीं जाते; मेरे ऊपर जो विपत्ति आज आकर पड़ी है वह कोई अकस्मात् बात नहीं है। दैवी भाव ने मुझे नहीं रोका इससे मैंने परिणाम निकाला कि मेरा मर जाना ही भला है। अतः मैं अपने विरोधियों अथवा विपद्दियों से किञ्चित भी अप्रसन्न नहीं हूं परन्तु उन्होंने तो मुझे हानि पहुंचाने के लिये ऐसा किया था, इतने के लिये मैं उन्हें दोषी ठहराता हूं।

परन्तु उनसे मेरी एक प्रार्थना है कि जब मेरे पुत्र बड़े बड़े होवें और आत्मिक सुधार के सामने धन दौलत पर अधिक ध्यान दें तो आप लोग उनके साथ वैसाही वर्ताव करें जैसा कि मैं आपके साथ करता था और यदि अज्ञानी होकर भी अपने को ज्ञानी कहें तो उन्हें भला बुरा कहना। यदि आपने ऐसा किया तो आपकी मेरे और मेरेपुत्रों के ऊपर अतीव कृपा होगी।

समय आवेगा कि मैं मरने के लिये जाऊं और आप संसार में रहने के लिये। मृत्यु अच्छी है वा जीवन यह बात तो केवल परमात्मा ही पर विदित है।

---

[१२]

कारागार में किराती का सम्भाषण

न्यायालय से लाकर सुकरात एक मास तक कारागार में बन्द रक्खा गया था। क्योंकि उस समय एथेन्स का प्रधान पुजारी डेलस द्वीपको गया हुआ था और उसके लौटने तक किसी को मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सकता था।

सत्ताईसवें दिन किरातो प्रातः ही जब कि चारों ओर अंधेरा छा रहा था, कारागार में सुकरात के पास गया। उस समय सुकरात सोरहा था। इस कारण किराती चुपचाप बैठा रहा। जब थोड़ी देर के पीछे सुकरात जगा तो निम्न लिखित सम्भाषण आरम्भ हुआ।

सुकरात—आज इतने सवेरे क्यों आये हो? अभी अंधेरा है।

किराती—जी हां आज जल्दी आया हूं। अभी सूर्य उदय होने को है।

सुक०—मुझे आश्चर्य होता है कि कारागार रक्षक ने तुमको यहां आने की किस प्रकार आज्ञा देदी?

किराती—सुकरात! वह मुझको जानता है क्योंकि मैं यहां पर प्रायः आयो जाया करता हूं इसके अतिरिक्त मैंने उसकी मुट्ठी भी गरम करदी है।

सु०—तुम इतने समय से आकर चुप क्यों बैठे रहे? तुमने मुझे क्यों नहीं जगाया?

कि०—वास्तविक में यही चाहता था। कि मुझे इतना शोक और इतनी बेचैनी न होती किन्तु तुम्हें गहरी नींद सोते हुए देखकर मुझे आश्चर्य होता है। मैं तुम्हारे आराम में गड़बड़ी डालना नहीं चाहता था इसी कारण मैंने तुम्हें नहीं जगाया था। और इस समय भी वैसे ही प्रसन्नता प्रगट कर रहे हैं जैसी कि सदा से अपने जीवन में करते आये हैं आप तो इस विपत्ति को बड़े धैर्य के साथ सहन कर रहे हैं।

सु०—किराती! यदि मैं इस वृद्धावस्था में शोक करता तो मुझे न सोहता।

कि०—और भी तो इतनी आयु के मनुष्य इस विपत्ति में

पड़ते हैं किन्तु उनकी वृद्धावस्था उन्हें शोक करने से नहीं रोकती है।

सु०—यह बात तो सच है परन्तु तुम अपने आने का कारण बताओ।

कि०--मैं हृदय विदारक समाचार लाया हूं। चाहे आप ऐसा समझें वा नहीं किन्तु मेरे साथियों के लिये और विशेष कर मेरे लिये तो यह अत्यन्त दुःखदायी है।

सु०—सो क्या बात है ? क्या डेलस से वह जहाज आगया है जिसके आने पर मैं मारा जाऊंगा ?

कि०—अभी आया तो नहीं है किन्तु सनियम (Sunium) से आये हुये एक मनुष्य द्वारा विदित हुआ कि वह आज आजावेगा तो फिर कल तुम्हारी जीवनी का नाटक समाप्त होगा।

सु०—जीवन का भले प्रकार अन्त हो जाने दो क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है परन्तु मेरे विचार से तो जहाज आज नहीं आ सकता है।

कि०—यह तुमने किस प्रकार जाना ?

सु०—मैंने अभी एक स्वप्न देखा था। उसी से मैंने यह परिणाम निकाला है। अच्छा हुआ तुमने मुझे नहीं जगाया अन्यथा स्वप्न में भंग पड़ जाता।

कि० वह स्वप्न क्या है ?

सु०—मुझे ऐसा दिखाई दिया था कि एक सुन्दरी स्त्री धवल वस्त्र (पवित्रता का चिन्ह) धारण किये मेरे पास आकर कह रही है 'The Third day hence thou shalt Fair Pithia reach.'

अर्थात् परसों तुम पवित्र तथा सुन्दर स्वर्ग धाम के दर्शन करोगे। परंतु मैं जहाज आने पर दूसरे दिन मारा जाऊंगा अत· एव जहाज आज नहीं आ सकता।

कि०—सुकरात! कैसा आश्चर्य जनक स्वप्न ..

सु०—किन्तु किरातो! मेरे लिये इसका आशय स्पष्ट है।

कि०—आशय तो स्पष्ट है, परन्तु सुकरात मैं अन्तिम समय पर तुम से प्रार्थना करता हूं कि मेरा कहा मानकर अपना जीवन बचालो। आपकी मृत्यु के साथ मैं एक मित्र ही नहीं खोदूंगा किंतु लोग यह समझेंगे कि सुकरात को बचाने के लिये किरातो ने कुछ भी उद्योग नहीं किया सो यह मेरे लिये लाज की बात होगी। इससे अधिक लाज की और क्या बात हो सकती है कि मित्र के सामने रुपये की रक्षा की जावे? संसार कभी इस बात का विश्वास नहीं करेगा कि मैंने तुम्हारे बचाने का पूर्ण उद्योग किया था।

सु०—परंतु किरातो! हम संसार की सम्मति पर क्यों ध्यान दें बुद्धि मान लोग तो सत्य बात को मानेंगे वे तो झूठ नहीं बोलेंगे।

कि०—परंतु हमें संसार की सम्मति का भी कुछ विचार करना आवश्यक है। क्योंकि तुमको जो मत्यु दंड दिया गया है उसी से स्पष्ट है कि साधारण लोग एक व्यक्ति को बड़ी से बड़ी हानि पहुंचा सकते हैं।

सु०—किरातो! मैं तो यही चाहता हूं कि सर्व साधारण किसी मनुष्य को बड़ी से बड़ी हानि पहुंचा सकें क्योंकि उस दशा में ही वह बड़े से बड़ा लाभ भी पहुंचा सकेंगे। परन्तु इन दोनों में से कोई बात ठीक नहीं है न तो वह किसी मनुष्य·

को मूर्ख ही वना सकते हैं और न बुद्धिमान ही, वे तो अन्धा धुन्ध काम करते हैं।

कि०—चाहे कुछ होवे, सुकरात ! क्या तुम इस बात का भय कर रहे हो कि यदि गुप्तचरों ने हमारे तुम्हें चोरी से निकाल ले जाने की सूचना देदी तो हमारी धन, और सम्पत्ति सब की सब छिन जावेंगी। यदि यही बात है तो भय मत करो क्योंकि तुम्हारे रक्षा के हेतु हम बड़ी से बड़ी आपत्ति का सहर्ष सहन करने को तत्पर हैं। अतएव मेरी बात को मान लो।

सु०—मुझे इस बात की भी चिन्ता है और कुछ अन्य भी है।

कि०—तो इस बात की चिन्ता मत करो। कई लोगों ने थोड़ा ही रुपया लेकर तुमको बचा देने का वचन दिया है, तुम यह भी जान सकते हो कि ये गुप्तचर तो थोड़ा सा ही धन लेकर सहमत हो जाते हैं। इस कार्य के लिये मेरी दौलत आपके अधीन है और यदि आप मेरी दौलत व्यय करने में हिचकिचाते हैं तो और भी कई सज्जन रुपया लिये तयार हैं, इस कारण तुम धन दौलत की चिन्ता छोड़ दो। इस बात की भी चिन्ता मत करो कि यदि तुम्हारा देश निकाला होगया हो तो तम कहां मारे २ फिरोगे। क्योंकि जहां कहीं तुम जाओगे वहीं तुम्हारा स्वागत किया जावगा। यदि तुम थैसली (Thessaly) जाना चाहो तो वहां मेरे कई मित्र हैं, वह सर्व प्रकार से तुम्हारी रक्षा करेंगे।

जब तुम अपने प्राण बचा सकते हो तो खोदेने से क्या लाभ है ? किन्तु पापही है। तुम्हारे शत्रु तुम्हें मारना चाहते हैं इस कारण तुम उनके मनोरथ पूरे मत करो। इसके अति-

रिक्त यदि तुम अपने पुत्रों को भी शत्रुओं के सहारे छोड़ जाओगे तो वह अनाथों का सा जीवन काटेंगे। यदि तुम अपने पुत्रों को पढ़ाही नहीं सकते तो तुम्हें उचित था कि उत्पन्न न करते। इस प्रकार तुम सुगममार्ग पर चलना चाहते हो, इससे हम सब को लाज आवेगी क्योंकि तुम सदा से लोगों कोसाहसी और वीर होने की शिक्षा देते रहे हो। लोग विचार करेंगे कि तुम्हारा न्यायालय में जाना तुम्हारे न्याय का ढंग और सब से अधिक तुमको मृत्यु दण्ड यह सब हमारी ही उदासीनता से हुए हैं। इससे यह सिद्ध होगा कि हमने तुम्हारा जीवन न बचाया और आपत्ति के समय में मुख मोड़ लिया। सुकरात! सोचो तो सही कि यह बातें हमारे तुम्हारे लिये हानिकारक ही नहीं किन्तु लाजदायक भी होंगी। अब यही एक उपाय सम्भव है कि बचजाने का पक्का विचार करलो। सब बातें आज ही रात को होजानी उचित हैं नहीं तो पीछे बाधा पड़ेगी। ऐ सुकरात मेरी बात सुनने को निषेध मत करो।

सु०—प्रिय किरातो! यदि मेरे बचाने के विषय में तुम्हारी चिन्ता मानसिक दृष्टि से उचित है तब तो माननीय है अन्यथा उसका अधिक होना अधिक हानिदायक है। मैं केवल तर्क पर ही ध्यान देता हूं अतएव हमें यह देखना चाहिये कि तुम्हारी बात युक्त है वा अयुक्त। यदि मैं तर्क द्वारा अपने पहिले विचारों को कभी न छोड़ूंगा, भलेही लोग बड़े २ डर दिखाकर मुझे भयभीत करना चाहें जैसे कि भूत के भय से बाल बच्चों को डराते हैं। हम पहिले विचार किया करते थे कि तुच्छ लोगों की सम्मतियां माननीय हैं अन्य की नहीं, तो

यह हमारा विचार ठीक था वा नहीं ? किरातो ! मेरी प्रबल इच्छा होरही है कि तुम्हारी सहायता से अपनी पूर्व निश्चित् बातों की परीक्षा करूं और यह भी देखूं कि उनका यहां पर प्रयोग करना चाहिये अथवा नहीं ? जब कभी हम निष्पक्ष हो कर सोचते थे तो यही परिणाम निकाला करते थे कि कुछ उदारचित्त पुरुषों की सम्मतियां माननीय हैं शेष की नहीं। किरातो ! क्या तुम इस बात को मानते हो। क्योंकि मनुष्य दृष्टि से देखा जावे तो तुम्हें कल मरना नहीं है अतः मृत्यु का प्रभाव तुम्हारे ऊपर नहीं पड़ सकता। तो क्या तुम नहीं विचार करते कि सब लोगों की सब सम्मतियां माननीय नहीं है ? किन्तु थोड़े ही मनुष्यों की थोड़ी सम्म-तियां माननीय हैं।

कि०-मैं ऐसा विचार करता तो हूं।

सु०-तो क्या हमको अच्छी सम्मतियों की प्रतिष्ठा और बुरी सम्मतियों का त्याग नहीं करना चाहिये ?

कि०-अवश्यमेव।

सु०-किन्तु अच्छी सम्मतियां ज्ञानियों की होती हैं और बुरी सम्मतियां मूर्खों की होती हैं।

कि०-यह भी ठीक बात है।

सु०-तो क्या हम नहीं विचार किया करते थे कि रोगी को केवल अपने वैद्य की ताड़ना, प्रशंसा और सम्मति का ध्यान रखना चाहिये अन्य पुरुषों का नहीं ?

कि०-मेरी भी यही सम्मति है।

सु० तो उसे केवल एकही मनुष्य की ताड़ना का भय और प्रशंसा का हर्ष होना चाहिये अन्य का नहीं ?

कि०-वास्तव में।

सु०—तो उसे अपने वैद्य ही की आज्ञानुसार कार्य करना और भोजन चाहिये, और जो चिकित्सा में प्रवीण हैं उन्हीं के अनुसार न कि औरों के भी।

कि०—यह सच है।

सु०—अच्छा। यदि वह इसी एक मनुष्य का ध्यान करै और उसकी धमकी व बड़ाई को न सोचे किन्तु अन्य पुरुषों का जो चिकित्सा नहीं कर सकते, विचार करे, तो क्या उसे हानि न पहुंचैगी।

कि०—अवश्यही उसको हानि होगी ?

सु०—उसे कैसे और किस प्रकार हानि होगी ?

कि०—निस्सन्देह उसका शरीर बिगड़ जावेगा।

सु०—तुम ठीक कहते हो। किराती ! संक्षेपतः क्या यह सिद्धान्त सभी बातों में युक्त नहीं है ? इस कारण सत्य असत्य, ऊंच नीच, भलाई बुराई तथा प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा इत्यादि इसी प्रकार के प्रश्नों में जिनके ऊपर हम विचार कर रहे हैं, क्या हमें उन्हीं लोगों की सम्मति का ध्यान नहीं रखना चाहिये जो इन बातों को समझते हैं ? क्या विपरीत करने से हमारे शरीर का भाग जो सत्य से सुधरता और असत्य से बिगड़ता है, निकम्मा नहीं होजावेगा।

कि०—हां सुकरात ! मैं तुम्हारी बात को मानता हूं ?

सु०—तो क्या जब शरीर ही बिगड़ गया तो जीवन जीवन व्यतीत करने योग्य है ?

कि०—नहीं कदापि नहीं।

सु०—जीवन उसी समय अच्छा मालूम होता है जब हमारे शरीर का वह भाग जो भलाई से सुधरता और बुराई

से बिगड़ता है, ठीक दशा में रहता है ? क्या वह भाग पञ्चत्व से बने शरीर से किसी प्रकार कम मूल्यवान है ?

कि०—नहीं, कदापि नहीं।

सु०—किन्तु और अधिक ही मूल्यवान है।

कि०—जी हां कहीं अधिक ही मूल्यवान है ?

सु०—प्रिय मित्र ! तब तो हमें लोगों की सम्मति की ओर कुछ भी ध्यान न देना चाहिये, किन्तु हमको तो स्वयं ईश्वर की ओर उन लोगों की सम्मति का विचार करना चाहिये तो तुम्हारा यह विचार अयुक्त है कि हमें सत्य असत्य के विषय में सर्वसाधारण की सम्मति का विचार करना चाहिये।

फि० क्या हम कह सकते हैं कि सर्व साधारण किसी मनुष्य को मृत्यु दे सकते हैं ?

कि०—यह तो स्पष्ट है यह तो अवश्य कह सकते हैं।

सु०—ठीक परन्तु मित्र ! मुझे वैसा प्रतीत होता है कि हमारा अभी निकाला हुआ परिणाम वैसा ही है जैसा कि हम लोग पूर्व समय में निकालते आये हैं। अब यह विचार करो कि हमें अपना जीवन केवल व्यतीत करना है या भलाई से व्यतीत करना है ?

कि०—भलाई के साथ व्यतीत करना है।

सु०—भलाई के साथ तथा प्रतिष्ठा और सत्यता के साथ जीवन व्यतीत करने का एक ही आशय है। क्या तुम यह मानते हो ?

कि०— जी हाँ मैं मानता हूं।

सु०—अब इन बातों को लेकर हमें यह सोचना है कि एथेन्स निवासियों की आज्ञा के प्रतिकूल हमारा भागने का

उद्योग करना उचित है वा अनुचित । यदि उचित सिद्ध हुआ तब तो हम करेंगे अन्यथा नहीं । किराती ! मेरा विश्वास है कि नाम प्रतिष्ठा धन दौलत और बाल बच्चों के विषय में चिन्ता करना जैसा कि तुम अभी कह चुके हो केवल उन्हीं लोगों का विचार है जो विना सोचे समझे ही किसीको मृत्यु दण्ड दे देते हैं और यदि उनकी सामर्थ्य होती तो जीवन दान भी देते । परन्तु मेरा अन्तःकरण कहता है कि हमें उस प्रश्न के सिवाय जो कि मैं अभी उठा चुका हूं अर्थात् हम यहां से भाग जाने में उचित कार्य कर रहे हैं वा अनुचित किसी अन्य बात पर विचार नहीं करना चाहिये । यदि हम यह परिणाम निकालें कि ऐसा करना अनुचित है तो हमको यहां रहने से जो कोई भी विपत्ति आवे उसका धैर्य और साहस के साथ सामना करना चाहिये ।

कि०—सुकरात ! मेरी समझ में तुम्हारा कहना यथार्थ है परंतु हमको क्या करना चाहिये ।

सु० महाशय ! मैं इसका भी साथ ही साथ विचार करता हूं और यदि तुमने मेरी कोई बात काट दी तब तो मैं तुम्हारा कहना मान लूंगा अन्यथा तुम कभी मुझ से छिप कर भागने के विषय में न कहना मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारी दृष्टि में अनुचित कार्य करूं मेरी यही इच्छा है कि तुम सहमत होते चलो किन्तु तुम यह बताओ कि निश्चित सिद्धान्तानुसार हमको उस प्रश्न पर विचार करना चाहिये वा नहीं ?

कि०—अवश्यमेव !

सु०क्या हमको अनुचित कार्य कभी नहीं करना चाहिये वा हम कभी २ किसी दशा में कर भी सकते हैं ? क्या अनु-

कार्य करना प्रतिष्ठित है ? जब हमने पूर्वकाल में यह निश्चय किया था कि चाहे संसार सहमत हो वा न हो परन्तु हमको अनुचित कार्य कभी नहीं करना चाहिये तब क्या हम केवल बच्चों के समान झूठी बातें किया करते थे ? उचित करने से चाहे हमको थोड़ा दण्ड मिले वा अधिक परन्तु अनुचित करना सदा लाज दायक और निन्दनीय है । क्या यह हमारा विश्वास है ?

कि०—है तो सही ।

सु०—तो हमें कभी बुराई नहीं करना चाहिये ?

कि०—कभी नहीं ।

सु०—क्या लोकमतानुसार हम बुराई के बदले बुराई कर सकते हैं ?

कि०—कभी नहीं ।

सु०—तो न तो किसी मनुष्य को हानि ही पहुंचानी चाहिये और न बुराई के बदले उसके साथ बुराई ही करनी चाहिये । इस बात के स्वीकृत करने में इस बात का ध्यान रखना कि तुम अपने निजी विचारों से अधिक कुछ नहीं स्वीकार करते हो, क्योंकि मेरी समझ में बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं जो इस बात को स्वीकार करते हो अतएव स्वीकार करनेवालों और न करने वालों में कोई भी बात समानता की नहीं रहती इस कारण वे एक दूसरे को बुरी दृष्टि से देखते हैं । क्या हम इस बात को पूर्णतया स्वीकार कर सकते हैं कि मनुष्य को हानि पहुंचाना वा बुराई के बदले बुराई करना सदा वर्जित है क्या तुम इस विषयमें मुझसे भिन्नहो मैं तो सदा यहीविश्वास करता रहा हूं और अब भी करता हूं, परन्तु यदि तुम इस

को नहीं मानते तो कारण बतलाओ और जो मानते हो तो मेरी बात सुनो ।

कि०-आप कहते चलें क्योंकि मैं भी आपकी बात को मानता हूं !

सुक०-तो मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि क्या मनुष्य को अपने सभी सिद्धान्त मानने चाहिये अथवा वह छल करके उनमें से कुछ त्याग भी सकता है ?

कि०—मनुष्य को अपने सभी सिद्धान्तानुकूल चलना चाहिये ।

सु०—तो अब सोचो तो सही कि बिना राज्य की आज्ञा लिये मैं उनको हानि पहुंचाऊंगा अथवा नहीं, जिनको कि मुझे हानि नहीं पहुंची चाहिये क्या मैं भागने से अपने बचनों का पालन करूंगा !

कि०--मैं तुम्हारे प्रश्न को नहीं समझता हूं अतएव उत्तर नहीं दे सकता ।

सु०—अच्छा तो इस प्रकार समझो कि यदि ज्योंही मैं यहां से भाग जाने के लिये टाट कमंडल बांध रहा होऊं (यदि मेरे बचने से यही अभिप्राय है) ज्योंही राज्य के नियम व व्यवस्था मेरे पास. आकर पूछें 'हमको यथा शक्ति तोड़ देने की चेष्टा करने के अतिरिक्त भागजाने से तुम्हारा क्या विचार है ? क्या तुम समझते हो कि वह राज्य जिसके स्थापित नियमों द्वारा किये हुये न्यायों को साधारण लोग न गिनें, क्या कभी भी स्थिर रह सकता है' ! तो किराती ! इस प्रकार के प्रश्नों का मैं क्या उत्तर दूंगा ! क्योंकि नियम सदा पालने के लिये होते हैं ? क्या मैं उनको यह उत्तर दूंगा

परन्तु राज्य ने मुझे हानि पहुंचाई है, उसने मेरा न्याय ठीक प्रकार से नहीं किया है। क्या मैं यही कहूंगा ?

कि०—अवश्यमेव, आपको यही कहना होगा।

सु०—अच्छा कल्पना करो कि नियम यह उत्तर दे 'सुकरात ! क्या तुम्हारे यही वचन थे कि तुम कारागार में से भाग जाओगे या यह थे कि न्यायाधीश जो कुछ आज्ञा देंगे तुम उनका पालन करोगे ? यदि हमने उनके इन वचनों पर आश्चर्य प्रगट किया तो वह कहेंगे 'सुकरात ! जिस प्रकार तुम अपने जीवन में प्रश्नोत्तर करते रहे हो वैसे ही हमारे प्रश्न का उत्तर दो और आश्चर्य न करो। हमसे और न्याय से तुम्हें क्या मत विरोध है जिसके कारण तुम हम को नष्ट करने की चेष्टा कर रहे हो ? क्या इन नियमों द्वारा ही तुम्हारे पिता ने तुम्हारी माता को ग्रहण कर तुम्हें उत्पन्न नहीं किया था ? कहो तुम्हें विवाह सम्बन्धी नियमों के विरुद्ध क्या कहना है ? यदि मैं उत्तर दूं कि मुझे कुछ नहीं कहना है तो वह पूछेंगे, "तुम्हें उन नियमों के विरुद्ध क्या कहना है जो शिशु-पालन-पोषण संबन्धी हैं और जिनके अनुसार तुम्हारा पालन पोषण और शिक्षा हुई है ? क्या हमने तुम्हारे पिता को तुम्हें शिक्षा देने के लिये सन्नद्ध करके उचित नहीं किया था ?।"

तो मैं यही उत्तर दूंगा कि उचित किया था। तो वह फिर पूछेंगे, जब तुम्हारा जन्म, पालन पोषण तथा शिक्षा सभी काम हमारे द्वारा हुये हैं तो तुम अपने को हमारा पुत्र व सेवक होने से क्यों निषेध करते हो ? जैसे कि तुम्हारे पूर्वज भी होते चले आये हैं। क्या तुम अपने और हमारे अधिकारों

को समान समझते हो! क्या तुम यह सोचते हो कि यदि हम तुमको दण्ड देंगे तो तुम हमारे ऊपर बदला लेने का उद्योग करोगे? तुम्हारे अधिकार वैसे नहीं हो सकते जैसे तुम्हारे माता, पिता, व शिक्षक के थे। तुमको यह अधिकार नहीं है कि यदि तुम्हारे पिता तुमको दण्ड देवें तो तुम उनसे बदला लो, अथवा भला बुरा कहें तो तुम भी भला बुरा कहो, या तुम्हारे साथ बुराई करें तो तुम भी ऐसा ही करो। क्या। तुम यह समझते हो कि तुम्हें अपने देश के नियम व व्यवस्था पर बदला लेने का अधिकार है? यदि हम तुम्हारे कार्यों को अनुचित जानकर तुम्हें नष्ट करना चाहें तो क्या तुम भी, जो कि सदा भलाई व गुणों की खोज में थे हम से यथाशक्ति बदला लेना उचित समझोगे! हमारी समझ में तो तुम्हें यह सोचना चाहिये कि तुम्हारा देश तुम्हारे माता पिता से अधिक योग्य, प्रशंसित और पवित्र है, देवगण भी उसकी प्रतिष्ठा करते हैं, तुम्हारा कर्त्तव्य है कि उसकी अपने माता पिता से अधिक प्रतिष्ठा करो, यदि वह तुमसे क्रोधित होवे तो या तो उसकी आज्ञा का पालन करो अन्यथा उससे क्षमा प्रार्थना करो और जब कभी वह तुमको कारागार, लड़ाई, मृत्यु वा अन्य दण्ड दे तो तुम सब कुछ सहन करो। तुमको न तो भागना, न पीछे हटना और न मुख मोड़ना चाहिये। और प्रत्येक स्थान में चाहे न्यायालय हो, लड़ाई हो अथवा कारागार हो तुम्हें उसकी आज्ञापालन करनी चाहिये वा उसे यह विश्वास दिलाना चाहिये कि उसकी आज्ञा अनुचित है। किन्तु माता पिता के प्रति हाथ उठाना ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है और देश के प्रति ऐसा करना तो अत्यन्त ही निन्दनीय है। तो क्या

हमको यह नहीं कहना चाहिये कि नियम सत्य कह रहे हैं ?

कि०—मेरे विचार से तो वे सत्य हैं।

सु०—स्यात् ये मुझसे पुनः कहेंगे सुकरात! सोचो तो सही कि तुम भागने से हमको हानि पहुंचा रहे हो। हमने तुमको संसार में उत्पन्न किया पाला शिक्षा दी और प्रत्येक अच्छी २ वस्तु का थोड़ा २ भाग दिया इस पर भी डंके की चोट घोषणा करदी कि यदि कोई हमसे असंतुष्ट है तो वह जिधर चाहे चला जावे। हमने उसको यह स्वतंत्रता बड़े होते और राज्य व्यवस्था को समझते ही देदी थी। यदि कोई मनुष्य हमसे वा नगर से अप्रसन्न है तो हम उसको एथेन्स के किसी उपनिवेश में जाने से नहीं रोकते किन्तु जो कोई वहां हमको प्रबन्ध करते देख कर भी कहीं नहीं जाता है तो वह यहां रहने से ही प्रगट कर रहा है कि वह हम से संतुष्ट है। हमारी आज्ञा का अपमान करनेवाला तीन बुराइयां करता है, पहिले तो वह उन नियमों का पालन नहीं करता जो विवाह सम्बन्धी होते हुए उसके पिता हैं। दूसरे वह अपने पालन पोषण करनेवाले नियमों का प्रतिपालन नहीं करता। तीसरे वह हमें तोड़ देने से उस वचन का पालन नहीं करता जो कि उसने हमारा पालन करने के सम्बन्ध में दिया था। (जो कि उसके नगर में रहने से ही सिद्ध है) बिना हमको अनुचित सिद्ध किये ही वह यह कार्य कर रहा है। फिर भी हमने उसको अपनी आज्ञा का पालन करने के लिये बाधित नहीं किया था क्योंकि हमने उसे दूसरा मार्ग भी बतला दिया था किन्तु वह किसी की भी चिन्ता नहीं करता है।

सुकरात! तुम अन्य एथेन्स निवासियों के मुकाबले में

एथेन्स नगर को छोड़ कर अन्य स्थानों में बहुत कम गये हो इससे सिद्ध होता है कि तुम उनके देखने से हम से अधिक संतुष्ट थे अतएव हमारा पालन करने को भी तुम सब से अधिक बाध्य हो। तुम कभी किसी खेल कूद वा अन्य प्रकार की यात्रा के लिये नगर छोड़कर नहीं गये जिस प्रकार कि अन्य नगर निवासी जाते थे। तुमको किसी दूसरे नगर वा देश के देखने की इच्छा नहीं हुई थी। अतएव तुम हमसे और नगर से संतुष्ट थे। इसके अतिरिक्त तुमको यह नगर ऐसा सुन्दर और प्रिय मालूम हुआ कि यहीं पर तुमने बच्चे उत्पन्न किये। यदि तुम नगर से किसी प्रकार असंतुष्ट थे। तो अपने न्याय के समय देश निकाला पसंद कर लेते। जो कार्य तुम इस समय राज्य की बिना आज्ञा लिये कर रहे हो, वह तुम न्याय होते समय सबकी आज्ञा से कर सकते थे, किन्तु उस समय तुमने मत्यु में ही प्रशंसा समझी क्योंकि तुमने स्पष्ट कहा था कि देश निकाले से तो मृत्यु ही अच्छी है। किन्तु अब तुम हमको और वचनोंको नष्ट करनेमें लाज नहीं करते? यह तुम्हारा गुलामों का सा कार्य है। अब तुम इस बात का उत्तर दो कि तुमने अपने शब्दों द्वारा ही नहीं किन्तु कार्यों से हमारे प्रबन्ध में रहना स्वीकार किया था या नहीं? तो मैं इन बातों का क्या उत्तर दूंगा क्या हम यह कह देंगे कि तुम्हारी बात असत्य है?

क्रि०—नहीं, हम उनकी बात को अवश्यही सत्य बतावेंगे।

सु०—तब वह प्रश्न करेंगे 'तुमने जो हमको यहां अपने रहने की स्वीकारी दी थी वह शीघ्रता में नहीं दी थी कि अयुक्त दे दी हो परन्तु तुम्हारे सामने ७० वर्ष का समय था! जब

कभी तुमको हम या राज्य प्रबन्ध बुरे लगते तभी तुम अन्य नगर को जा सकते थे। क्या तुम उन वचनों को नहीं तोड़ रहे हो ? तुम कहा करते थे कि क्रीट आदि द्वीपों का राज्य प्रबन्ध अच्छा है परन्तु तुमने वहां पर जाना भी पसन्द नहीं किया। तुम अन्धे, लूले, लंगड़ों के मुकाबिले में भी एथेन्स छोड़कर बहुत कम बाहर गये हो। स्पष्टतया तुम नगर से और उससे भी अधिक हमारे नियमोंसे संतुष्ट थे क्योंकि ऐसा कौन है जो बिना नियम वाले नगर से संतुष्ट होवे ! हमारी शिक्षा मान कर भाग जाने से अपना नाम कलंकित मत करो।

क्योंकि सोचो तो सही इस प्रकार भाग जाने से तुम अपने वा मित्रों के लिये क्या भला कर लोगे। यह तो स्पष्ट है कि उनको देश निकाला होगा, धन सम्पत्ति छिन जावेंगे, और अच्छे २ अधिकार भी छिन जावेंगे। और यदि तुम किसी सुप्रबन्धित स्थान को चले जाओगे तो वहां के निवासी तुमको नियमों का नष्टकर्त्ता समझकर भ्रम की दृष्टि से देखेंगे। इससे तुम यहां के न्यायाधीशों को भी विश्वास दिला दोगे कि उन्होंने जो दण्ड की आज्ञा दी थी वह उचित थी क्योंकि जो मनुष्य नियमों को नष्ट करता है वह अपने चाल चलन से नवयुवकों को भी बिगाड़ता है। तब क्या तुम सुप्रबन्धित नगरों और सभ्य समाजों को त्याग दोगे क्या उस दशा में जीवन जीवन कहा जा सकता है। क्या तुम सभ्य लोगों से यहां की तरह ही बात चीत करोगे। क्या तुम फिर भी उनसे कहोगे कि भलाई, न्याय, संस्थाएँ और नियम मनुष्य के लिये अत्यन्त अमूल्य वस्तुएं हैं ? क्या तुम सोचते हो कि ऐसा कहना तुम्हारे लिये लाजकी बात न होगी ?

तुम थैसली में किराती के मित्रों के पास जाओगे जहां कि अत्यन्त कुप्रबन्ध है। वह लोग तुम से पूछेंगे कि तुम किस प्रकार भेष बदलकर, भिखारी के से कपड़े पहिनकर, एक आश्चर्यजनक व हास्यपूर्ण दशा बनाकर कारागार से छिप कर भागे थे? यह कह कर वह लोग तुम्हारी हंसी उड़ावेंगे। क्या कोई भी यह नहीं कहेगा कि तुम अति बूढ़े हो, और थोड़े ही दिवस और जीवित रहोगे तब भी तुम अपने जीवन के इतने लोभी हो कि उसकी रक्षा के लिये बुरे से बुरा कर्म करने को तत्पर हो। यदि तुम उनको अप्रसन्न न करोगे तो स्यात् वह तुमसे ऐसा न कहें परन्तु यदि तुमने उन्हें अप्रसन्न किया तो वह ऐसी खरी २ सुनावेंगे कि तुम्हारे मुख पर तीतरी उड़ने लगेंगी, इस प्रकार तुमको गुलाम और अनुचित प्रशंसावादी बनकर समय काटना पड़ेगा, अतएव तुम केवल पेट भरने के अतिरिक्त और कुछ न कर सकोगे। तब यहां की यह तुम्हारी न्याय, भलाई इत्यादि सम्बन्धी बातें कहां चली जावेंगी। तो क्या तुम अपने पुत्रों के हितार्थ जीवित रहना चाहते हो! क्या तुम उनका पालन पोषण और शिक्षा पूर्ण करलोगे! क्या तुम उनको अपने साथ थैसली को ले जाओगे! क्या तुम उनको मातृभूमि के लिये विदेशी बनाकर कुछ लाभ प्राप्त करलोगे! यदि तुम उनको एथेन्समें छोड़ दोगे तो क्या उनके पास न रहकर तुम उन्हें शिक्षित बना सकोगे हां तुम्हारे मित्र उनका पालन करेंगे तो क्या तुम्हारे मित्र उनका पालन तुम्हारे थैसली की ही यात्रा करने पर करेंगे और परलोकयात्रा करने पर नहीं? तुमको यह बात नहीं सोचनी चाहिये क्योंकि यदि वह सच्चे मित्र हैं तो सब दशा

में उनका पालन करेंगे।

'नहीं सुकरात हमने तुमको पाला है इस कारण हमारी ही शिक्षा मानो। न्याय के सामने किसी भी पुत्र व जीवन की चिन्ता मत करो जिससे स्वर्ग सभा में न्यायाधीशों के सन्मुख अपनी निरपराधता सिद्ध कर सको! यदि तुम भाग जाओगे तो न तो तुम और न तुम्हारे मित्र ही मृत्यु के पीछे होने वाली प्रसन्नता से कुछ प्राप्त कर सकेंगे! यहां पर हमने नहीं किन्तु लोगों ने तुमको अपराधी ठहराया है! यदि तुम अपने वचन तोड़ोगे, बुराई के बदले बुराई ही करोगे और हमारे नियमों को, देशको तथा अपने मित्रों को सताओगे तो तुम्हारे भाग जाने पर हम तुमसे अप्रसन्न रहेंगे और तुम्हारी मृत्यु के पश्चात् हमारे सम्बन्धी स्वर्गीय नियम यह देख कर कि संसार में तुमने नियमों को तोड़ा है, तुम्हारे साथ सहानुभति न प्रगट करेंगे। अतएव हमारी बात मानो और किरातो के प्रलोभनों में न फंसो।

मित्र किरातो! विश्वास रक्खो जिस प्रकार इष्ट देवों को मनाने वाले स्यानों के कानों में शब्द गूंजते हैं उसी प्रकार यह कहे हुए शब्द ईश्वर की ओर से मेरे कानों में गूंज रहे हैं। मुझे विश्वास होगया है कि यदि तुम मेरे विचारों में परिवर्त्तन करने के हेतु कुछ भी कहोगे तो वह व्यर्थ होगा।

कि०—सुकरात! मैं अधिक कुछ नहीं कह सकता।

सु०—अच्छी बात है, तो मेरा ही कहना मानो क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है।

सुकरात की मृत्यु के पश्चात् एक दिन ईकेकरात (Eche-

crates) ने अपने मित्र फ़ीडो से पूछा

ईके०—फ़ीडो ! क्या सुकरात के विष पीने के दिन तुम कारागार में उपस्थित थे या तुमने यह सब वृतान्त किसी अन्य व्यक्ति से सुना है।

फ़ीडो—मैं स्वयं वहां उपस्थित था।

ईके०—तो मृत्यु के समय कहे हुये अपने गुरुके शब्द सुनने की मुझे बड़ी लालसा है क्योंकि उस समय से एथेन्स नगर यहां पर मेरे पास कोई नहीं आया है।

फ़ीडो—तो क्या तुमने उसके न्याय व मृत्यु के विषय में कुछ नहीं सुना है ?

ईके०—नहीं हमने सुना तो था परन्तु यह नहीं मालूम हुआ कि न्याय होने के बहुत दिन पीछे वह क्यों मारा गया था ?

फ़ीडो—आह ! यह तो बड़ी विलक्षण बात हुई थी क्योंकि उसके मृत्यु दिन के पूर्व उस जहाज का जो एथेन्स निवासी डेलस द्वीपको भेजते हैं,पिछला भाग सुशोभित किया गया था।

ईके०—यह जहाज कौनसा है ?

फ़ीडो—एथेंस निवासियों के कथनानुसार यह वही जहाज है जिसमें बैठकर थीसियम सात युवक और सात युवतियों की जान बचाने को गया था। *

*एथेन्स में एक कहावत प्रसिद्ध है क्रीट द्वीप में एक राक्षस रहता था वह बड़ा भयंकर था। एक सन्धि के अनुसार एथिन्स निवासी उसके खाने के लिये प्रतिवर्ष ७ पुरुष और सात स्त्रियां भेजा करते थे । जब राजकुमार थीसियस बड़ा हुआ तो एक वर्ष चौदहों पुरुषों व स्त्रियों को लेकर वहां गया और लड़ाई की जिसके अन्त में राक्षस मारा गया और थीसियस घर लौट आया।

एथेन्स निवासियों ने डेलस द्वीप के एपोलो देवता को शपथ थी कि यदि वह राजकुमार और चौदहों साथी बच गये तो प्रति वर्ष लोग एक पवित्र संदेशा देवता को भेजा करेंगे। एथेन्सके नियमानुसार जब तक वह जहाज लौटकर नहीं आता था उस समय तक नगर में किसी को मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सकता था। इस कारण सुकरात की मृत्यु के पहिले एक मास तक कारागार में बन्द रहना पड़ा था जहां कि हम लोग सारे दिन उससे बैठे २ बातचीत किया करते थे। किन्तु मृत्यु के दिन हम लोग शीघ्र ही कारागार के द्वार पर पहुंच गये वहां द्वारपाल हमको खड़ा करके भीतर गया जहां कि राज कर्मचारी सुकरात की हथकड़ी बेड़ी उतार रहे थे और लौट कर आने पर हमको भीतर जाने दिया। हम लोगों को देखकर उस की स्त्री जेन्थिपी विलाप करने लगी कि सुकरात का यह अन्तिम समय है और वह अपने मित्रों से बात चीत कर रहे हैं। यह देख कर सुकरात ने किराती द्वारा उस छाती पीटती व विलाप करती हुई को घर भिजवा दिया। मुझे आश्चर्य होता है कि उस दिन भी हमने सुकरात को वैसा ही प्रसन्न-चित्त पाया जैसा कि वह सदा रहता था वह कहने लगा पर-मात्मा ने सुख और विपत्ति में झगड़ा होता देख दोनों के एक ही डन्डी के सिरों पर बांध दिया था अतः जिस किसी के पास एक जायगी तो पीछे २ दूसरी अवश्य ही जायगी। अब तक तो हथकड़ियों से मुझे हाथ में पीड़ा होती थी किन्तु अब उस स्थान को मलने पर सुख मालूम होता है। इतने पर हम लोगों ने उसे रोक दिया और अपना सम्भाषण आरम्भ किया अन्त में हमने उससे मृत्यु प्राप्त मनुष्य की भविष्य दशा

जिसके के विषय में पूछा तो उसने उत्तर दिया ।

सुक०—मृत्यु के पश्चात् मनुष्य परलोक में जाते हैं वहां पर प्रत्येक को कर्मानुसार उचित फल दिया जाता है। जो लोग न तो बुरे ही कर्म करते हैं और न अच्छे, वह एकरन (Achelan) नदी पर भेजदिये जाते हैं जहां से वह जलपोत द्वारा झील को चले जाते हैं। वहां पर उनको दुष्ट कर्मों के बदले दण्ड दिया जाता है तत्पश्चात् अच्छे कर्मों के बदले पुरस्कार दिया जाता है। किन्तु महा कुकर्मी पुरुष जिनका पवित्र होना असम्भव हो जाता है तारनास (Tarnas) झील को भेज दिये जाते हैं जहां पर उनको उचित दण्ड दिया जाता है। माता पिता के प्रति अपराध करने वाले कुछ दिन पश्चात् अपने २ माता पितासे क्षमा की प्रार्थना करते हैं और जब तक कि क्षमा नहीं मिलती वह कष्ट सहते हैं। परन्तु पवित्र कर्मों वाले शरीर बन्धनसे मुक्त हो ऐसा जीवन प्रसन्न जीवन व्यतीत करते हैं कि उसका सरलता से वर्णन नहीं कर सकता। अतः पवित्र कर्म करने में हमें किञ्चित संकोच न करना चाहिये।

ज्ञानी पुरुष इस बात का दुराग्रह न करेगा कि जो बातें मैंने कही हैं वह अक्षरशः यथार्थ हैं परन्तु उसको इस बात का अवश्य विश्वास होजायगा कि आत्मा अमर है अतएव पवित्र कर्म करने में आगा पीछा न करना चाहिये। इस कारण मनुष्य को सदैव सांसारिक सुखों की ओर अधिक ध्यान न देकर आत्म सुधार करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से जीवनान्त होने पर उसको अच्छा और सुखदायक परिणाम मिलेगा! तुम लोग भी अपने २ समयानुसार इस संसार

को छोड़कर परलोकवासी बनोगे परन्तु मेरा समय अभी आगया है इस कारण विष का प्याला पीने से पहिले मैं स्नान कर लेना उचित समझता हूं जिससे कि पीछे फिर स्त्रियों को कष्ट न उठाना पड़े। इसके पश्चात किरातो ने पूछा 'सुकरात हमको क्या आज्ञा है ? हम तुम्हारी और तुम्हारे बाल बच्चों की किस प्रकार उचित सेवा करें तब सुकरात ने उत्तर दिया तुमको पहिले अपना आत्म सुधार करना चाहिये तत्पश्चात् अन्य कार्य। मेरी सदा से यही शिक्षा है इसीको मानो परन्तु ध्यान रहे कि अब वचन देकर पीछे कुछ भी न करने से कोई लाभ नहीं। तब किरातोने पूछा कि "हम तुम्हारी अन्तिम क्रिया कैसे करें" तब सुकरात ने कहा 'किरातो। यथार्थ में सुकरात तो जीवात्मा है जो कि तुम लोगों से इस समय वार्तालाप कर रहा है। मृत्यु के पीछे यह प्राण पखेरू उड़ जावेंगे केवल पंचतत्त्व से बना हुआ शरीर रह जायगा इसकी जैसे चाहो क्रिया करना। किन्तु अन्त्येष्ठि क्रिया के समय प्रसन्न रहना।

इतना कहकर सुकरात स्नानार्थ एक दूसरी कोठरी में चला गया और किरातो भी हमें ठहरने की आज्ञा देकर उसके साथ ही चला गया। हम लोग आपस में उपस्थित विपत्ति के ऊपर शोक करने लगे और हमको ऐसा कष्ट हुआ जैसे हमारा पिता हमको अनाथ करके त्याग रहा है। इस प्रकार हम अपना भाग्य ठोकते रहे। उसने स्नान करने के पश्चात् अपने पुत्र (जिनमें एक तो कुछ समझदार था और दो छोटे छोटे थे) और अपनी पत्नी सहित सब उपस्थित स्त्रियां बुलाई। फिर उनको तो अपनी अन्तिम आज्ञा देकर विदा किया और सायंकाल से एक घंटा पूर्व हमारे पास आया

और अधिक नहीं कहने पाया था कि राजकर्मचारियों के सेवक ने आनकर कहा 'सुकरात जब मैं अन्य पुरूषों को राजाज्ञानुसार विष पीने के लिये कहता हूं तो वह क्रोधित होकर मुझको कुवचन कहने लगते हैं, परन्तु मुझे विश्वास है कि आप अन्याय न करेंगे और न मुझे दोषी कह कर क्रोधित होंगे क्योंकि जितने मनुष्य यहां पर अब तक आये हैं उनमें आप सब से अधिक ज्ञानी हैं। अतः आप यथोचित कीजिये क्योंकि आपको मेरे आने का कारण ज्ञात ही होगा। इतना कहकर वह रोता हुआ बाहर चला गया। सुकरात ने उसे उत्तर दिया 'मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा,

फिर सुकरात ने हम से कहा 'यह कैसा सत्पुरुष है जब से मैं कारागार में आया हूं वह बार बार मेरे पास आता है और सदा सत्पुरुषों का सा व्यवहार करता रहा है. और अब भी वह कितनी उदारता से मेरे लिये शोक कर रहा है अतः उसकी आज्ञानुसार यदि विष तयार हो तो मेरे पीने को लाओ नहीं तो शीघ्रतया तयार कराओ। किराती ने कहा ' सुकरात अभी कोई शीघ्रता नहीं क्योंकि सूर्य नहीं छिपा है। बहुधा मनुष्य तो सूर्यास्त के पश्चात् भी सहर्ष खाते पीते और मित्रों से वार्तालाप करते हैं। अतः हमको भी अभी बातें करना चाहिये।

इस पर सुकरात ने उत्तर दिया ' जो लोग ऐसी दुष्टता करने से कुछ लाभ समझते हैं वे ही ऐसा करते हैं। मैं ऐसा कदापि न करूंगा क्योंकि थोड़ी देर पीछे विष पीने से मेरे ऊपर केवल जीवन लालच करने का कलङ्क लगेगा। मेरी जीवनचर्य्या का अन्त होगया इसलिये मुझे नीचता प्रगट

करने को बाधित न करो। तब किरातो ने अपने सेवक को बाहर जाने का संकेत किया, वह शीघ्र ही विष देने वाले मनुष्य को अपने साथ लिवा लाया, जो कि एक कटोरे में विष तयार करके लाया था तब सुकरात ने कहा 'महाशय ! कहिये अब मुझको क्या आज्ञा है ! उसने उत्तर दिया 'केवल आप इसको पीकर के इधर उधर टहलने लग जाइये, जब आपको टांगे भारी मालूम होने लगें तो पैर फैलाकर सो जाना फिर उसका प्रभाव स्वयं होजायगा, । फिर सुकरातने विष का प्याला लेकर कहा 'क्या मैं इसमें से किसी देवता के नाम पर थोड़ा सा पृथ्वी पर डाल सकता हूं, उसने उत्तर दिया हम आवश्यकतानुसार ही तयार करते हैं, उससे अधिक नहीं, । सुकरात ने कहा 'हे ईश्वर। यह मेरी परलोक यात्रा सुखदायक होवे, यही मेरी अन्तिम प्रार्थना है। इतना कहकर उसने धैर्य के साथ विष का प्याला पी लिया पीने के पूर्व तक तो हम लोग ज्यों के त्यों बैठे रहे परन्तु जैसे ही उसने पिया हम अपने को धीरज न बंधा सके और फूट २ कर रोने लगे यहां तक कि किरातो भी आंसू न रोक सका और अपोलोडरस (Appolodorous) ने तो दुपक २ कर रोनेसे हमारा साहस तोड़ दिया। परंतु सुकरात ने कहा 'मित्रो ! आप क्या कर रहे हैं ! मैंने तो स्त्रियों को पहिले ही से इसी कारण भेज दिया था कि वह ऐसा न करने पावें। यह सुनकर हमको लज्जित होना पड़ा और सब रोने से रुकगये। तब सुकरात इधर उधर घूमने लगा और जब उसकी टागें भारी मालूम होने लगीं तो लेट गया, फिर वह मनुष्य उसकी टांगे दबाने लगा और ज़ोर से पैर दबाकर सुकरात से पूछा कि उसे दर्द तो

नहीं मालूम होता था सुकरात ने नाहीं करदी ! हम लोगों को उसका शरीर ठंडा होता हुआ मालूम पड़ने लगा । सुकरात स्वयं ही इस बात से कहने लगा कि हृदय पर पहुंचते ही जीवन का अन्त हो जावेगा फिर उस ने अपना मुंह खोल लिया जो कि पहिले से ढक लिया था और अन्तिमवार कहा 'किराती ! मुझे ऐसली पायस (Asclepius) देवता की भेंट एक मुर्गा देना है । (देवता को सुकरात ने एक समय अपने रोग मुक्त होने पर एक मुर्गा चढ़ाने कहा था) सो उसके देना मत भूल जाना, । किराती ने कहा 'अच्छा मैं देदूंगा। और क्या कहना है ! इसका सुकरातने कोई उत्तर नहीं दिया परन्तु उसके हिलने पर उस मनुष्य ने सुकरात के ऊपर से कपड़ा उतार लिया, और उसकी आंखें गड़गईं' । तब किराती ने उसके मुख और नेत्र बन्द कर दिये।

इस प्रकार ईकेकरात ! उस अत्यन्तबुद्धिमान, न्यायी और सत्पुरुष की, जिसका सा दूसरा मिलना असम्भव है, जीवन चर्या का अन्त हुआ ?

शोक ! महाशोक !!

सज्जन चरित सिखाते हमको,
कर सकते हैं निज उज्वल ।
जगते जाते समय रेत पै,
छोड़े चिह्न चरण निर्मल ॥

इति शुभमस्तु

उपसंहार

प्यारे पाठको ! आपने यूनान के नररत्न सुकरात का जीवन चरित पढ़ लिया किस प्रकार उस आत्मवीर ने अपने सच्चरित्र और आत्मिक बल से संसार को दिखला दिया कि धर्मात्मा और न्यायी लोग सांसारिक कष्टों और यातनाओं की परवाह न करके अपने कर्तव्य से कभी नहीं हटते। आपने जीवन चरित पढ़ते हुये ध्यान दिया होगा कि सुकरात ने प्रत्येक स्थान पर "आत्म-सुधार" पर बड़ा ज़ोर दिया है उसका कथन अक्षरशः सत्य है जिस पुरुष ने अपना सुधार नहीं किया है वह दूसरों का कैसे सुधार कर सकता है। जिसने स्वयं जिस फल को नहीं चक्खा वह किस प्रकार दूसरों को उस फल का स्वाद चखा सकता। वास्तविक वही पुरुष दूसरों को मार्ग बता सकता है जो स्वयं उस मार्ग पर चला हो।

सुकरात ने और संसारिक लोगों की भांति अपने समय को सांसारिक व्यसनों में पड़ कर व्यर्थ नहीं खोया। वह आरम्भ से ही अपना सुधार करता हुआ दूसरों के सुधार का प्रयत्न करता रहा। इतने ज्ञानी और बुद्धिमान होने पर भी वह साधारण मनुष्यों की भांति अपने जीवन को विताया करता था यहां तक कि उसे अपने परिवार को पालन करने में भी धनाभाव के कारण बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था। सामान्य फटे कपड़ों से गुज़ारा करता था। परन्तु उसे यदि रात दिन किसी की चिन्ता थी तो केवल नवयुवकों के आत्म-सुधार की इसके समझाने का ढंग ही विलक्षण था वह अपराधी के ही मुख से अपराध को स्वीकार करा लेता था। और सदा के लिये पुनः अपराध न करने की प्रतिज्ञा ले लेता था।

न्याय और नियम के पालन करने में वह चट्टान के समान स्थिर रहता था संसार की कोई शक्ति नहीं थी जो उसे कर्तव्य कर्म से डिगा सके। उसने किसी कवि के निम्न लिखित वाक्य को अपने जीवनमें घटाकर दिखा दिया थाः—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टं।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात् पथः विचलन्ति पदं न धीराः॥

अर्थात् संसार के नीति विशारद चाहे बुराई करें अथवा प्रशंसा करें, चाहे लक्ष्मी स्वयं आवे चाहे रूठ कर सदा के लिये चली जावे चाहे मृत्यु आज ही क्यों न आजावे और चाहे युगान्तर के लिये चली जावे परन्तु धीर पुरुष न्याय से कभी विचलित नहीं होते।

पाठको! आपने देखा सुकरात ने विष का प्याला पीकर अपने प्राण समर्पण कर दिये किन्तु वह अपने कर्तव्य से नहीं हटा हमें लोगोंको भी अपनी जीवनयात्रा में सुकरात के समान सावधान रहना चाहिये।
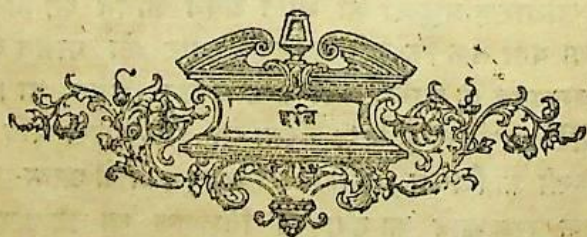
ओंकार बुकडिपो पुस्तक भण्डार—प्रयाग

सब सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि ओंकार बुकडिपो नामक एक बृहत् पुस्तकालय प्रयाग में खोला गया है। जिस में हिन्दी साहित्य की सब प्रकार की पुस्तकें विक्रयार्थ रक्खी जाती हैं। कन्याओं तथा स्त्रियों के लिये तो जो संग्रह इस पुस्तकालय में किया गया है वैसा शायद सारे भारतवर्ष भर में न होगा। बालक और बालिकाओं को इनाम देने के लिये सब प्रकार की उत्तम और शिक्षाप्रद पुस्तकें यहां मिलती हैं उच्च कक्षा के हिन्दी साहित्य प्रेमियों के लिये तो यह पुस्तकालय भण्डार ही है। यही नहीं इस पुस्तकालय का अपना प्रेस भी है। अंग्रेज़ी हिन्दी और उर्दू का सब प्रकार का टाइप मौजूद है। इसमें हिन्दी भाषा की उत्तमोत्तम पुस्तकें छापी जारही हैं। हिन्दी भाषा के लेखक जो उत्तम पुस्तकें स्वतन्त्र लिखें या अनुवाद करें और प्रकाशन का भार ओंकारबुकडिपो को देना चाहें वे कृपाकरके मेनेजर से पत्र व्यवहार करें; कमीशन एजेंट जो हमारी पुस्तकें बेचना चाहते हैं। वे भी पत्र व्यवहार करें उनको उचित कमीशन दिया जायगा।

मेनेजर ओंकार बुकडिपो प्रयाग

कन्या-मनोरंजन

एक अनोखा सचित्र मासिकपत्र

कन्याओं तथा नव वधुओं के लिये कन्या-मनोरंजन एकही अद्वितीय सचित्र मासिक पत्र है। यदि आपको अपनी पुत्रियां बहिनों तथा नववधुओं को विद्यावती, गुणवती, मधुर भाषिणी और सदाचारिणी बनाना है तो आप कन्यामनोरंजन अवश्य मगाइये। मूल्य भी ऐसे उत्तम मासिक पत्र का केवल १।) साल है डांक महसूल सहित साढ़े ८ पैसे मासिक पड़ते हैं।

मेनेजर—कन्या-मनोरञ्जन प्रयाग।

Printed by Pt. Onkar Nath Bajpai at the Onkar Press, Allahabad.

५—स्वामी रामतीर्थ
६—राणा प्रतापसिंह
७—गुरु गोविन्द सिंह
८—महात्मा सुकरात

५—महात्मा गौतम बुद्ध
६—महादेव गोविन्द रानाडे
७—गुरु नानक
८—भीष्म पितामह

मैनेजर—ओंकार प्रेस, प्रयाग।

ओङ्कार आदर्श-चरितमाला

सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि ओंकार प्रेस प्रया[illegible] संसार के आदर्श पुरुषों के जीवन चरित निकालने आ[illegible] कर दिये हैं। प्रत्येक जीवन चरित का मूल्य केवल ।) [illegible] है। प्रत्येक जीवन चरित में लगभग १०० पृष्ठ होते हैं आ[illegible] चरित नायक का एक सुन्दर चित्र भी दिया जाता है। प्रत्येक मास में लगभग दो जीवन चरित निकाले जाते हैं। इस प्रका[illegible] ४०० जीवन चरित निकाले जांयगे। यदि आप अपना ना[illegible] अपने बालक तथा बालिकाओं की उन्नति चाहते हैं तो अ[illegible] पढ़िये और अपने बच्चों को पढ़ाइये। जो लोग अपना न[illegible] ग्राहकश्रेणी में पहले लिखा लेंगे और रुपया भेज देंगे उन के पास १२ जीवन चरित घर बैठे पहुंच जायंगे। प्रत्येक जीवन चरित छपते ही सेवा में भेजा जाया करेगा। डांक महसूल न देना पड़ेगा।

जो लोग रुपया पेशगी न भेजकर ग्राहक श्रेणी में नाम लिखाना चाहते हैं उनको वी० पी० और डांक महसूल सहित प्रत्येक जीवनी ।=) में भेजी जावेगी।

छपे हुये जीवन चरित

१—स्वामी विवेकानन्द
२—स्वामी दयानन्द
३—महात्मागोखले
४—समर्थ गुरु रामदास
५—स्वामी रामतीर्थ
६—राणा प्रतापसिंह
७—गुरु गोविन्द सिंह
८—आत्मवीर सुकरात

निम्न लिखित छप रहे हैं

१—नेपोलियन बोनापार्ट
२—छत्रपति शिवाजी
३—आर्य पथिक पं० लेखराम[illegible]
४—स्वामी शंकराचार्य
५—महात्मा गौतम बुद्ध
६—महादेव गोविन्द रानाडे
७—गुरु नानक
८—भीष्म पितामह

मैनेजर—ओंकार प्रेस प्रयाग।